भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 13 | नवम्बर-दिसम्बर 2012 | अंक 11-12

पाण्डुलिपियाँ

भूरी और उदास
वह एक जर्जर-सी पांडुलिपि थी
शायद पिछली सदी की

इतनी जर्जर थी वह
कि मैंने डरते-डरते पहला पन्ना खोला
और क्या आप विश्वास करेंगे
मुझे उसके भीतर सुनाई पड़ी एक स्त्री की चीख
जो किसी अक्षर के नीचे
दबी पड़ी थी

पर सबसे रोमांचक अनुभव
मुझे उस समय हुआ
जब मैं खड़ा था एक प्राचीन हस्तलेख के सामने
और उसके भीतर से एक आवाज ने
जैसे मुझे पहचाना और लगा जैसे पूछा हो—
'कैसे हो केदारनाथ?'

मैं हिला ज़रूर
पर चकित नहीं हुआ
क्योंकि चमत्कार नहीं होतीं पांडुलिपियाँ
वे बोलना-बतियाना चाहती हैं
आदमी से
अकेलेपन की यातना झेलनी पड़ती है उन्हें भी
और कई बार सदियों तक

अकसर सोचता हूँ
वह क्या होता है उनकी स्याही में
कि पन्ना-पन्ना बिखर जाने के बाद भी
वे सदियों तक ताकती रहती हैं
किसी राहुल की राह
किसी तिब्बत के मठ में!

मेरा अनुरोध है कभी आप आएँ
और मेरे साथ चलें
उन थकी-पुरानी
फटी-उदास पांडुलिपियों की दुनिया में

आप पाएँगें वहाँ शब्दों ने पीसकर
समय को बराबर कर दिया है
और अब वहाँ सारा समय एक जगह इस तरह है

शेष पृष्ठ 6 पर

मध्यमा-प्रतिपदा

मौसमी-विक्षोभ के प्रभाव से पश्चिमोत्तर प्रान्तों में हिमपात और वर्षा शुरू हो चुकी है। हेमन्त, शिशिर की ओर अग्रसर है। ऋत् नियम से संचालित प्रकृति का परिवर्तन-चक्र मनुष्य को मनो-शारीरिक रूप से प्रभावित तो करता ही है और अनुकूल-वातावरण पाकर नयी ऊर्जा से भर देता है। सौभाग्यशाली हैं विन्ध्य-उपत्यका में रहनेवाले लोग जिन्हें वर्ष में छः-छः ऋतुओं की सौगात प्राप्त है। डर है, कि विकास की आँधी में हमारे पर्यावरण का पारिस्थितिक-सन्तुलन इतना न बिगड़ जाये कि पद-पद पर प्रलय की आशंका बनी रहे।

डॉ० आइंस्टाइन ने कहा था कि यदि तीसरा युद्ध हुआ तो कुछ नहीं बचेगा। बचेगा भी कैसे? हमारे शस्त्रागारों में इतने अणु-अस्त्र तैयार रखे हैं जिनसे 300 बार हमारी पृथ्वी जैसे विशाल ग्रह को नष्ट किया जा सकता है। अस्त्र-जीवी सत्ताओं की साम्राज्यवादी मानसिकता के समानांतर हैं गाँधी, जिन्होंने सत्य-शील और अहिंसा के कर्मयोगी आचरण द्वारा उन्हें चुनौती दी और जनता के लिये मध्यमा-प्रतिपदा की अवतारणा करते हुए विश्व शान्ति का पथ प्रशस्त किया। वर्तमान-विश्व के वैचारिक-परिदृश्य में 'आइडॅल' हैं गाँधीजी, जिनकी जन्मतिथि को 'विश्व-अहिंसा-दिवस' घोषित करके पश्चिम के बौद्धिक-जगत ने अपनी वैचारिक-स्वीकृति प्रदान की है।

वस्तुत: 21वीं सदी में प्रवेश के साथ ही वैश्वक-मानव-समुदाय (देश-दुनिया कहीं भी) एक उथल-पुथल भरे दौर में प्रवेश कर चुका है। विज्ञान के परिदृश्य में आज 'हस्तामलकवत्' है सारी दुनिया। इस दुनिया में कल्पनाओं के उड़ान भरने और कामनाओं को पूरा करने की जद्दोजहद के बीच आम-आदमी जीवन जीने का टैक्स चुका रहा है। यद्यपि विकसित राष्ट्रों की प्राथमिकताएँ और प्रतिबद्धताएँ अलग हैं और विकासशील राष्ट्रों की अलग किन्तु सत्ता और पूँजी के समीकरण ज्यों के त्यों हैं। संवैधानिक तौर पर ज्यादातर देशों में लोकतांत्रिक-पद्धति ने उक्त समीकरण की जड़ें और मजबूत की हैं। यद्यपि चुनी हुई सरकारों की जन-प्रतिबद्धता के कारण विकास-धारा में वंचित-वर्ग को शामिल किये जाने की कवायद भी चल रही है। तुलनात्मक तौर पर विकासशील देशों में यह स्थिति और भी विकट है जहाँ 90 प्रतिशत की कीमत पर 10 प्रतिशत लोग चाँदी काट रहे हैं। परिणामत: हर जगह असंतोष है, भारतीय-उपमहाद्वीप हो या अफ्रीका-दक्षिण अफ्रीका हो, मध्य-एशिया या दक्षिण-पूर्व एशिया हो, फिलीस्तीन या लैटिन अमेरिका हो, कहीं भी हो सर्वत्र मनुष्य जूझ रहा है भूख से, गरीबी से, बीमारी से, बेरोजगारी से, महँगाई से, भ्रष्टाचार से, आतंकवाद से, प्राकृत-आपदाओं से और इस संघर्ष में वह भी अपना प्राप्य पाना चाहता है। आम-आदमी की यह आकांक्षा जायज़ भी है और इसी आकांक्षा को एक आकर्षक-पैकेज का प्रलोभन देकर प्रत्येक मानवीय-संसाधन पर कब्ज़ा करता जा रहा है वही—दृश्य-अदृश्य समीकरण।

सामाजिक प्रशासन, राजनय और पूँजी का वर्तमान समीकरण मानव-सभ्यता के इतिहास की तरह पुराना है। युगों-युगों में नाम-रूप परिवर्तन के बावजूद उत्पादन-वितरण की प्रणाली का एकाधिकार ज्यों का त्यों है। राजतंत्र-गणतंत्र हो या कम्युनिस्ट-तंत्र अथवा लोकतंत्र हो,

शेष पृष्ठ 2 पर

पृष्ठ 1 का शेष

नौकरशाही और सेना के नख-दंत अपनी इतिहास-यात्रा में ज्यादा से ज्यादा धारदार होते गये हैं। इस ऐतिहासिक-परिदृश्य में उभरकर सामने आ चुका है नये तरह का साम्राज्यवाद, इसे हम पूँजीपरक कह सकते हैं। पहले यह चुनौती था अब स्थिति है। आर्थिक और तकनीकी-विनिवेश द्वारा पश्चिमी-कारपोरेट्स विकासशील देशों में सोची-समझी रणनीति के तहत संचार-माध्यम द्वारा भोग-संस्कृति का प्रसार कर रहे हैं ताकि इसी भोग-आभोग की मादकता में संघर्ष करते हुए 'आम-आदमी' की पीढ़ियाँ खपती रहें और इन्द्र-कुबेर के कोष भरते रहें।

सत्ता और पूँजी की इस निर्लज्ज-उन्मुक्त-क्रीड़ा और मीडिया-संचार-जन्य पश्चिमी भोग-संस्कृति के विरोध में इसी आम-आदमी को सामने आना होगा। यह विरोध नारों या आन्दोलनों से नहीं बल्कि आत्म-संयम, सन्तुलित भोग, अपरिग्रह, त्याग आदि घटकों द्वारा भावित मनोवृत्ति के माध्यम से ही सम्भव है। यह प्रतिकार का मध्यम-मार्ग है जहाँ मनुष्य के भोग-उपभोग का निषेध नहीं बल्कि अनुशासन है। यद्यपि मार्ग कठिन है किन्तु दु:साध्य नहीं। फिर भी सन्दर्भित जन-संघर्ष का यह अन्तिम शस्त्र नहीं हो सकता। इस वैश्वक-समस्या के परिप्रेक्ष्य में राजनय और अर्थतंत्र को जन-सापेक्ष नीतियाँ लागू करनी होंगी और संसाधनों के इस्तेमाल में जनता की भागीदारी सुनिश्चित करनी होगी तभी सार्थक होंगे विकास के प्रतिमान और सुदृढ़ होंगे मानवीय-संरचनाओं के स्मृति-चिह्न। इस आकल्पित मध्यम मार्ग के बारे में सोचते-सोचते गुनगुनाने लगा कवि-मन—

श्रेय वह नर-बुद्धि का शिवरूप आविष्कार,
ढो सके जिससे प्रकृति सबके सुखों का भार।
मनुज के श्रम के अपव्यय की प्रथा रुक जाय,
सुख-समृद्धि-विधान में नर के प्रकृति झुक जाय।

सर्वेक्षण

● **आर्थिक-प्रबन्धन :** अनर्थकारी अर्थ-व्यवस्था, विदेश की रेटिंग-एजेन्सियों द्वारा आलोचना और न्यूयार्क-टाइम्स जैसी पत्रिका द्वारा सर्वाधिक कमज़ोर बताये जाने के बाद सरकार चेती। माननीय अर्थशास्त्री प्रधानमंत्री ने कथित गठबंधन के दबावों से खुद को मुक्त करते हुए देश और दुनिया के बाजार के मद्देनजर कुछ कठोर फैसले लिये ताकि विदेशी निवेशक निर्बाध रूप से यहाँ निवेश कर सकें और देश की अर्थव्यवस्था सुदृढ़ बन सके। प्रधानमंत्री के फैसलों से भले ही देशी-विदेशी व्यावसायिक घराने सन्तुष्ट हों किन्तु सामान्य जनता तो एल०पी०जी० गैस एवं पेट्रोल-डीजल की सब्सिडी खत्म किये जाने से बेहाल है, इस पर एफ०डी०आई० का प्रपंच अलग जारी है। वस्तुत: सामान्य-जन जहाँ अपनी रोटी-दाल की कीमत चुकाने के लिए संघर्षरत है उस पर यह दोहरी-तिहरी मार भला कौन-सी खुशहाली लायेगी?

●● **खुलासे और खुलासे :** तकरीबन डेढ़-साल से भ्रष्टाचार जैसे व्यापक-बैक्टीरिया के खिलाफ़ ज़बानी 'फागिंग' की जा रही है। इस सिलसिले में ठोस कार्रवाई करते हुए केन्द्र-सरकार की जाँच-एजेंसियाँ सक्रिय हो गयीं और कुछ माननीय भी जेल की हवा खाकर जमानत पर रिहा हो गये। पर मुद्दे जहाँ के तहाँ हैं। भ्रष्टाचार के खिलाफ अन्ना हजारे का जन-लोकपाल बिल तो दूर सरकारी लोकपाल-बिल भी अभी तक संसद के पटल पर नहीं रखा जा सका है। दूसरी ओर राजनीतिक आकांक्षा लिये 'इण्डिया-अगेंस्ट-करप्शन' के एक सदस्य ने कांग्रेस अध्यक्ष के जामाता एवं भाजपा अध्यक्ष पर जैसे ही भ्रष्टाचार के आरोप लगाये हंगामा बरपा हो गया। चूँकि दोनों पार्टियों के अपने-अपने अंतर्विरोध हैं इसलिए इन खुलासों के बाद दोनों पार्टियाँ 'डैमेज' कण्ट्रोल करती नज़र आ रही हैं।

●●● **आकलन : 2012 :** (i) वर्ष के आरम्भ से ही 20वें विश्व पुस्तक-मेले की तैयारियाँ करते हुए हमने मेले में हिस्सा लिया। पुस्तक-प्रेमियों, लेखकों और प्रकाशकों के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय उत्सव बन चुका है सन् 1972 से आरम्भ यह विश्व-पुस्तक-पर्व। राष्ट्रीय बौद्धिक-सम्पदा को विश्व फलक पर रखते हुए अब हम भी गौरवान्वित हो सकते हैं।

तत्पश्चात सरकारी बजट की विभीषिका और महँगाई के मुद्दों के बीच विधान-सभा के चुनाव हुए। सरकार बदली किन्तु जन-आकांक्षाओं के सैलाब के बीच नयी सरकार भी सरकारी-दाँवपेंच के साथ 'सरकारी गति' से ही चल रही है।

(ii) दूसरी ओर सुदूर पूर्व जापान में गत वर्ष आये भूकम्प और सुनामी से विखंडित फुकुशिमा स्थित आणविक केन्द्र द्वारा हुए विनाश की बरसी तो मनायी गयी किन्तु ऊर्जा-प्रयोग के परिसीमन का कोई स्पष्ट संकेत नहीं दिया गया। फुकुशिमा की दुर्घटना से भयभीत भारतीय भी लामबंद हो चले हैं। पिछले महीने से जारी 'कुडनकुलम' परियोजना के विरोधियों का जल-सत्याग्रह उसी की अभिव्यक्ति है।

(iii) दो-तीन वर्षों से हमारे यहाँ साहित्य में शताब्दियाँ मनायी जा रही हैं। अज्ञेय-नागार्जुन-केदार-शमशेर के साथ रामविलास शर्मा की भी शती आरम्भ हो चुकी है। देश-दुनिया के हिन्दी-जन राष्ट्रीय परिदृश्य के साहित्यकारों का खास ख्याल रखते हैं किन्तु इस विशाल देश में जो हिन्दी-लेखक अपनी स्थानीयता को राष्ट्रीयता प्रदान कर रहा हो उसे प्राय: विस्मृत कर दिया जाता है। ऐसा ही एक नाम है—स्व० शिवप्रसाद मिश्र 'रुद्र काशिकेय'। रुद्रजी काशी की मिट्टी के कवि, कथाकार, उपन्यासकार, विद्वान शोधार्थी थे। उनकी कृति 'बहती गंगा' देश-विदेश में लोकप्रिय है। इस शताब्द-साहित्यकार को वाङ्मय की श्रद्धांजलि।

(iv) इस वर्ष हमारे यहाँ राष्ट्रपति का चयन होना था। पक्ष-विपक्ष की लामबंदी और राजनयिक उठा-पटक के बीच आखिर कांग्रेस के वरिष्ठ सदस्य श्री प्रणव मुखर्जी का चुनाव हुआ। महामहिम को हमारी बधाई!

दूसरी ओर अमेरिका में भी असमय के चक्रवाती तूफानों और बाढ़ जैसी प्राकृतिक-आपदा के बीच राष्ट्रपति चुनाव सम्पन्न हुए। बराक ओबामा के दुबारा राष्ट्रपति चुने जाने पर हमारी शुभकामनाएँ।

(v) कहते हैं रोमन-कैलेण्डर में वर्ष बदल रहा है। दरअसल कुछ नहीं होगा न समय की दस्तक सुनायी पड़ेगी न काल की पदचाप। लोग नाचते-गाते रहेंगे और चुपचाप वर्ष बदल जायेगा। नये कार्य-वर्ष की शुभाशंसाएँ...!

यह संकेत कर रही सत्ता
किसकी सरल विकासमयी;
जीवन की लालसा आज क्यों
इतनी प्रखर विलासमयी?

—परागकुमार मोदी

एक कुलपति का दीक्षा (शिक्षा)न्त-भाषण

—प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र (शिमला)
पूर्व कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

मेरे पढ़ाए छात्रों में हजारों आई०ए०एस० तथा पी०सी०एस० हो चुके हैं। आई०पी०एस्, आई०एफ०एस०, आई०आर०एस० तथा अधीनस्थ सेवाओं में भी उनकी अच्छी संख्या है। ऐसे सुयोग्य, प्रतिभाशाली तथा राज्य एवं केन्द्रशासन की धुरी बनने वाले 'सव्यसाचियों' की मैंने कोई नामावली तो नहीं तैयार की। फिर भी विविध प्रान्तों की यात्रा के क्रम में जब वे मिल जाते हैं तथा 'पितु-समेत कहि-कहि निज नामा' अपना परिचय देने लगते हैं तब मेरी भी छाती 'गरगज' हो जाती है—सुभगम्मन्यता से!

इलाहाबाद विश्वविद्यालय में मैं 1966 से 1991 तक रहा। वह जीवन का एक ऐतिहासिक कालखण्ड था। मैं फैकल्टीटॉपर तो था ही, मेरी अध्यापन-कीर्ति भी शिखर पर थी। साइन्स-फैकल्टी तक के विद्यार्थी छिप कर मेरी कक्षा में बैठते—मेघदूत पर व्याख्यान सुनने के लिये। एक वर्ष तो मेरी कक्षा में एक सौ बहत्तर छात्रों का नाम लिख दिया गया। अंकानुक्रम से भी हाजिरी लेना कठिन हो गया। तिस पर समस्या यह थी कि नामांकित छात्रों के आने से पूर्व ही, अन्य वर्गों तथा डिग्री कॉलेजों के छात्र, सीट पर बैठ जाते थे। प्राय: दो तीन वर्ष (संभवत: 1973, 74, 75 में) तक यह मामला यूनियन के नेताओं तथा उन्हीं की मार्फत कुलपति तक जाता रहा। ऐतिहासिक वटवृक्ष के नीचे जब मैं इक्स्ट्रा क्लास लेता तो प्राय: 500 छात्र एकत्र रहते। अद्भुत दिन थे वे!

विश्वविद्यालय के सामने 'कृष्णा कोचिंग' खुला। इलाहाबाद में यह कोचिंग-परम्परा की शुरुआत थी। विश्वविद्यालय के अनेक नामी-गरामी अध्यापक पढ़ाने गये। उस समय यह कोई निन्दनीय अथवा वर्ज्य कार्य नहीं था। बड़ा स्पृहणीय कार्य था, क्योंकि लग्गू-भग्गू को न विद्यार्थी पसन्द करते थे, न ही कोचिंग-संस्था के अधिकारी! छात्रों की पुरजोर संस्तुति से प्रभावित यादव जी एक दिन मेरे घर आये इस प्रार्थना के साथ कि वह संस्कृत में भी कोचिंग चलाना चाहते हैं। परन्तु छात्र तभी आने को तैयार हैं यदि मैं तैयार होऊँ पढ़ाने के लिये। मैंने विनम्रतापूर्वक मना कर दिया। यादव जी निराश होकर चले भी गये।

परन्तु अब, मेरे ही (बी०ए० कक्षाओं में) पढ़ाए गये चिर-परिचित तथा कुछेक मुँहलगे छात्र शाम-सवेरे आने लगे राजी करने के लिये। अन्तत: उनकी एक मार्मिक उक्ति ने मेरी नि:स्पृहता तोड़ दी। उन्होंने कहा—सर! यदि संस्कृत की कोचिंग नहीं चली तो हम लोग सफल नहीं हो पायेंगे और धीरे-धीरे लोग प्रतियोगिता-परीक्षा में संस्कृत लेना भी छोड़ देंगे। आप जैसे गुरुजनों के कारण जो विषय इतना लोकप्रिय है, वही उपेक्षित हो जायेगा। अन्तत: नुकसान संस्कृत का ही होगा।

शिष्यों के सत्तर्क ने मेरा मानभंग कर दिया और मैंने कोचिंग स्वीकार कर ली। जहाँ तक मुझे स्मरण है, 1987 में इण्डोनेशिया प्रस्थान करने के पूर्ववर्ती तीन वर्षों में मैं कृष्णा कोचिंग से सम्बद्ध रहा। उस समय, संस्कृत के बल पर प्रभूतसंख्यक छात्र विविध प्रतियोगिताओं में चुने जाते रहे। कोचिंग से अलग भी, ढेर सारे छात्र मेरे आवास पर आते थे पढ़ने, निर्देशन प्राप्त करने के लिये। रात 12 बजे तक भीड़ लगी रहती थी इन छात्रों की। अब यदि ऐसे कुछ छात्रों का नाम गिनाऊँ जो आज शासन में सर्वोपरि प्रतिष्ठित हैं तो मेरा 'कीर्ति-लोभ' प्रकट होगा। अत: यह प्रसंग यहीं छोड़ता हूँ।

यह तो इस आलेख-नाट्य की 'नान्दी' थी जो पर्दे के भीतर सम्पन्न हुई। अब पर्दा खुल रहा है तथा सूत्रधार प्रवेश कर रहा है यह बताने के लिये कि आज कौन नाटक खेला जायेगा? तो बन्धुओं! सावधान होकर सुनिये! आज का नाटक है—**एक कुलपति का शिक्षान्त-भाषण!** यह शीर्षक थोड़ा चौंकाने वाला है। कुलपति शब्द तो वही है जो उपनिषत्काल में था। बस अन्तर यह है कि पहले वह सर्वतंत्र-स्वतंत्र था, बड़े-बड़े चक्रवर्ती सम्राट् भी, राजकुमारों के प्रवेशार्थ, उसकी कुटिया के सामने दीन-हीन बने खड़े रहते थे, आज वह स्वयं कुलपति बनने के लिये राज्यपाल अथवा मुख्यमंत्री की जी-हुजूरी में लगा हुआ है। पहले वह अकेले ही दस हजार छात्रों को पढ़ाता एवं भरण-पोषण भी करता था, आज लगभग तीन-चार सौ अध्यापकों तथा इतने ही कर्मचारियों के साथ शिक्षा दे रहा है। अब विश्वविद्यालयों में छात्र भी दस हजार कहाँ? कुछ विश्वविद्यालय तो मात्र बी०एड० के छात्रों से चल रहे हैं, और कुछ कुलपति तो नाम-पद की तख्ती टाँगे, किराये के भवन में, एक कमरे में 'माछी' मार रहे हैं। उनके कुलपति बनने का बस एक ही लाभ हुआ कि यावज्जीवन 'पूर्वकुलपति' कहे जाने की उपलब्धि हो गई। तीसरा अन्तर यह है कि उपनिषत्कालीन कुलपति समावर्तन-संस्कार (विद्यासम्पूर्ति) के अवसर पर ब्रह्मचारियों को 'दीक्षान्त-भाषण' देता था। आज वही दीक्षान्त-प्रवचन **शिक्षान्त-प्रवचन** बन गया है, ब्रह्मचारियों के आचरण की दृष्टि से!

दीक्षान्त-प्रवचन की मेरी भी इच्छा बहुत दिनों से जोर मार रही थी। परन्तु मन मसोस कर रह जाता था, क्योंकि कुलपति नहीं बन पाया था। आनन्दकाननविहारी भगवान मणिकर्णिकानाथ शम्भु की कृपा से अन्तत: यह सुअवसर मुझे भी मिल गया। विश्वविद्यालय-कुलपति बन जाने के बाद दीक्षान्त-भाषण देने की मेरी पात्रता भी पक्की हो गई। अत: मैं अपने छात्रों, जिन्हें मैंने इलाहाबाद, शिमला तथा वाराणसी में पढ़ाया, विशेषत: वे शिष्यरत्न जो विविध प्रतियोगिताओं में उत्तीर्ण होकर शासन में **'की-पोस्टों'** पर आरूढ़ हैं, जिनके हाथ में शासन की नकेल है और जो इस अभागे राष्ट्र एवं इसके दुर्दशाक्रान्त समाज को, मात्र अपने बूते स्वर्ग बना देने की क्षमता रखते हैं, को अपना यह उपदेशामृत-पान करा रहा हूँ। मेरी ओर से तो यह दीक्षान्त-भाषण है, परन्तु दीक्षा की शिक्षा को मीलों पीछे छोड़ चुके ब्रह्मचारियों के लिये यह विशुद्ध **शिक्षान्त-भाषण** है!

तो मेरे राष्ट्र के कर्णधारों! अपने दीक्षान्त में मैंने मंत्र तो उपनिषद् वाले ही बोले थे—सत्यं वद, धर्मं चर आदि। परन्तु आप सब ने मेरे उपदेशों को संशोधन के साथ ग्रहण किया—अ-सत्यं वद। अ-धर्मं चर। स्वाध्यायात् प्रमद:। यानि यानि मम दुश्चरितानि तानि त्वयोपास्यानि नेतराणि। एष वै आदेश:।

यह देख कर मैं फूला नहीं समा रहा कि पिछले तीन दशकों से आप अपने इस शिक्षान्त-प्रवचन का निष्ठापूर्वक पालन कर रहे हैं। आपने अपने असत्यभाषण से, अधर्माचरण से अभूतपूर्व यश कमाया है। 'स्वाध्याय' को तो आपने यूँ उपेक्षित कर दिया जैसे कोई कुष्ठरोग-ग्रस्त व्यक्ति को उपेक्षित करता है। प्रतियोगिता-परीक्षा में नाक रगड़ते समय तो सुकरात, प्लेटो, अरस्तू, मार्क्स, मेकियावेली, चाणक्य, विवेकानन्द—सब आपकी जबान पर थे। परन्तु गाड़ी दलदल से निकलते ही आप सत्यकथा, मनोहर कहानियाँ तथा सरिता-मुक्ता पढ़ने लगे। ज्ञानवर्धक, धीर-गम्भीर साहित्य अब आपको पचता ही नहीं। सबसे बड़ी बात तो यह कि **कुछ बनने के ही लिये** तो पढ़ते थे, रटते-घोटते थे, सिर खपाते थे। अब जब बन ही गये तो फिर क्यों पढ़ें? किसके लिये पढ़ें? पढ़ना ही होगा तो लड़के पढ़ेंगे!

आपको शिक्षा के क्षेत्र में **'क्रीम'** यानी नवनीत माना जाता है क्योंकि आप अपनी दुर्धर्ष प्रतिभा, अनवरत अध्यवसाय तथा विस्तृत अध्ययन के बल पर आई०ए०एस०, पी०सी०एस० चुने गये हैं। आप दहकती आग में तपे कञ्चन हैं, आप खराद पर चढ़े हीरे हैं, आप शिक्षाजगत् के रत्न हैं। आप ने अपनी माँ की कोख पवित्र की है, पिता का नाम रौशन किया है, अपने कुलघर-जाति-ग्राम-जनपद-जवार तथा राज्य को सम्मानित किया है। आप पर किसी राजनेता का एहसान नहीं है। आप सीधे जनता से जुड़े हैं कलक्टर, डिप्टीकलक्टर, कमिश्नर,

पुलिस अधीक्षक तथा अन्यान्य अधिकारी बन कर! आप सर्वतंत्र-स्वतंत्र हैं!

यदि ऐसा है प्रियवर! तो फिर आप मंत्रियों के 'रखैल' बन कर क्यों रहते हैं? उनकी डाँट-फटकार के भय से आप को प्रात:कालीन **हकार-मकार** क्यों आने लगते हैं? इसलिये कि वे आपको कहीं दूर-दराज पटक देंगे? तबादला कर देंगे? तबादला कर देंगे तो राज्य में ही कहीं और भेज देंगे या देश से बाहर भेज देंगे? अरे, इस अभागे राष्ट्र की स्वाधीनता के लिये तो हमारे-आपके ही पुरखे अण्डमान (कालापानी) भेज दिये गये! जन्मभूमि में लौटने का सपना आँखों में लिये-दिये ही मर गये। और आप? आप अपने ही राज्य में, अपने ही देश में, कहीं और जाने से डर रहे हैं? और उसी डर के कारण लुच्चे-लफंगे, अँगूठाछाप मंत्रियों के हाथों बन्दर की तरह नाच रहे हैं? आपने तो अपना देव-व्यक्तित्व ही गिरवी रख दिया! मेरे जैसे आपके गुरुजन अब किस **अर्जुन** पर, किस **विवेकानन्द** पर गर्व करें?

अपने ओछे आचरण से आपने दीक्षा की बजाय **शिक्षा** का ही अन्त कर दिया। आपके पिता जी पैंसठ रुपये महीने पर टीचर थे, और उन्हीं के यशोवर्धन आपने पैंसठ लाख घूस देकर मंत्रिपद प्राप्त किया। क्या इस कुकर्म को आप छिपा सके? सारा प्रदेश आपकी माया को जान-समझ गया। दुर्भाग्य तो यह कि आप दुलत्ती मार कर कूड़े-कचरे के ढेर में फेंक भी दिये गये। क्या मंत्री बनकर आप अमर हो गये? या आपका 'मोक्ष' पक्का हो गया? आपने तो शरीर छोड़ने से पूर्व ही रौरव-कुम्भीपाक भोग लिया! यदि औरों की तरह दो-चार करोड़ कमा भी लिया होगा तो कौन तीर मार लिया? अमरमणि, गोपाल काण्डा और कलमाडी जैसों से तो अभी भी पीछे ही हैं!

प्रतिभा के कल्पवृक्षों! तुम्हारे जैसे **राम-लक्ष्मणों** की सृष्टि कर, तुम्हें बला-अतिबला सरीखी दुर्धर्ष अस्त्रविद्याओं से लैस कर—मेरे जैसे **विश्वामित्र** यह विश्वास करने लगे थे कि अब आततायी रावण मारा जायेगा। तुम जैसे **कृष्ण-बलराम** को शिक्षित कर मेरे जैसे **सान्दीपनि** कंस-विनाश की आशंसा करने लगे थे। तुम्हारे शौर्य-साहस की कठिन परीक्षा ली थी हमने। तुमसे बाघिन का दूध तक मँगाया था। पके फोड़े की पीव तक पीने को कहा था तुम्हारी निष्ठा मात्र परखने के लिये। गो कि फोड़े के स्थान पर मैंने पका आम बाँध रखा था। मेरे लाल! तुम सारी परीक्षाओं में खरे उतरे थे। तब मुझे लगा था कि दरिद्र होते हुए भी मैं महाकुबेर बन गया हूँ। राष्ट्र मेरा ऋणी है क्योंकि मैंने उसे राष्ट्ररक्षक दिया है।

परन्तु तुम्हें तो लकवा मार गया प्रतिष्ठा-पीठ पर बैठते ही! तुम तो लोमड़ियों, सियारों और कौवों की तरह, खेत के बीच में गड़े **धोखों** से डरने लगे? तुम क्लर्कों की तरह मूढ़ मंत्रियों के भाषण लिखने लगे। तुम्हारी स्थिति तो पानी में रहने वाले डेड़हे साँप (डुण्डुभ) जैसी हो गई जिसमें जहर ही नहीं होता! काट भी लिया किसी को तो कोई भय नहीं। हल्दी-मिश्रित एक गिलास मट्ठा ही पर्याप्त है उपचारार्थ!

जब मैंने सुना कि मुख्यमंत्री का यह दुर्लङ्घ्य आदेश है कि प्रत्येक जिलाधीश उन्हें प्रतिमास **इतने लाख** रुपये देगा ही देगा—अधीनस्थ अधिकारियों से वसूल कर, तो मेरी धरती खिसक गई। उस समय मैंने तुम्हारी राजनिष्ठा देखी, तुम्हारी सेवकाई देखी। तुमने मान-प्रतिष्ठा, इज्जत-आबरू, तेजस्विता-प्रतिभा—सबको गिरवी रख कर वसूली का काम प्रारम्भ किया। अपने ही भाई-बन्धुओं का, अपनी ही जनता का, अपने ही समाज का गला काट कर, पैसे की उगाही कर तुमने उस महाठगिनी का पेट भरा जिसका केवल एक ही तरोताजा चित्र हम पिछले एक दशक से, सर्वत्र चिपका देख रहे हैं!

तुम्हारे इन पापाचारों का क्या अन्त होगा? मेरा पढ़ाया तो तुमने सब गँवा दिया, अकारथ कर दिया। अब तुम्हें फिल्मी भाषा में, दस्युशिरोमणि **अमजद खान** का एक ही वाक्य पढ़ाना और समझाना है कि **जो डर गया वह मर गया** (आक् थू) तुम भी यदि आई०ए०एस्०, आई०पी०एस्० होकर सफेदपोश लोफरों से डर रहे हो तो स्वयं को मरा हुआ ही मानो। जिन्हें बोलने की तमीज नहीं, विषय का ज्ञान नहीं, जो चरित्रभ्रष्ट, झूठे, मक्कार, हप्त एवं लोकपीड़क हैं—क्या ऐसे एरण्डों (रेंड़ का पौधा) की सेवा के लिये ही तुमने खून जलाया था? क्या इसीलिये तुम आई०ए०एस्० परीक्षा में बैठे थे। अरे! इससे तो अच्छा था तुम किसी बबूल को पानी देते! फल-फूल न सही, दातौन की लकड़ी तो देता? तुम तो शिकारी के हाथ पर बैठे बाज बन गये जो अपनी ही जाति-बिरादरी के निरीह कबूतरों को मार रहा है, अपने लिये नहीं, अपने शातिर मालिक के लिये।

स्वाभिमान और प्रतिभा बेचने वाले मेरे बच्चों! क्या तुम्हारा ऐसा कोई अखिल भारतीय संघ या संगठन नहीं कि तुम इन भ्रष्ट नेताओं की जी-हुजूरी से स्वयं को मुक्त कर सको? ट्रक और टेम्पो तक चलाने वाले हमारे बहादुर भाई शासन को घुटना टेकाए दे रहे हैं, अपने साथ अन्याय और अत्याचार होने पर। और एक तुम हो कि ट्रांसफर और डिमोशन के भय से रात भर सुख से सो नहीं पा रहे हो? इसी भय से मंत्री जी के इशारे पर दिन को रात और रात को दिन बता रहे हो? यह स्वाभिमान बेच कर तुम जीकर भी क्या करोगे? क्या तुम सारा काम-काज ठप्प कर शासन को उसकी औकात नहीं बता सकते हो?

मीडिया ने इन राजनेताओं की क्या हालत कर रखी है? यह देख कर भी तुम्हारा स्वाभिमान जागृत नहीं होता? कलमाडी, कानी-मोझी, गडकरी, वीरभद्र, गोपाल काण्डा, अमरमणि, लालू प्रसाद, सुखराम, जोगी, मधु कोड़ा, अतीक, शहाबुद्दीन, उमाकान्त तथा झामुमो-प्रमुख आदि-आदि जैसे कितने ही लोग **जो बरा सो बुताना** की स्थिति से गुजर रहे हैं या फिर गुजर चुके हैं। यह सब देख तुम्हारा स्वाभिमान जागृत होना चाहिये!

आज भारतवर्ष का जो भी अध:पतन हो रहा है, याद रखो, उसके लिये इतिहास केवल **दो लोगों** को जिम्मेदार ठहरायेगा। एक तो होगे तुम, यानी **वास्तविक प्रशासक-वर्ग** जिसकी बुद्धि, प्रतिभा एवं कार्यशैली से शासन चलता है। और दूसरा वर्ग है—**हमारी सेना,** जो इस सीमा तक नि:स्पृह, तटस्थ, उदासीन, संन्यस्त और आत्मकेन्द्रित है कि वह बाहरी शत्रुओं से ही लड़ना अपना एकमात्र कर्तव्य मानती है। घर के भीतर जो **चीनी-पाकिस्तानी** घर वालों के साथ अत्याचार कर रहे हैं उससे उनका कोई मतलब ही नहीं। यदि वे एक बार उठ बैठते, एक बार सिंहनाद कर देते कि 'सुधारो स्वयं को, अन्यथा तुम्हारा यह लोकतंत्र का नाटक हम छन भर में हवा कर देंगे' तो शायद ये निरंकुश, निर्भय, और परम बेहया राजनेता सुधर जाते! राजनेता को केवल सेना से ही भय हो सकता है, किसी जाँच कमेटी या कारागार से नहीं।

अब अपना 'शिक्षान्त भाषण' समाप्त करता हूँ। जय हिन्द!

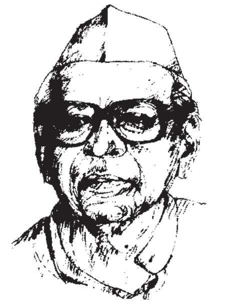

निवेदन विष्णु प्रभाकरजी के पत्रों हेतु

मानव मूल्यों के प्रति समर्पित साहित्यकार श्री विष्णु प्रभाकर ने अपने जीवन में हजारों पत्र लिखे होंगे। इन पत्रों में वे नितांत स्वाभाविक रूप से अपने अंतर मन की बात निष्पक्ष रूप से लिखते थे। उन पत्रों को यथासम्भव एकत्र करके उनके द्वारा व्यक्त महत्त्वपूर्ण विचारों का एक संकलन तैयार करने की योजना है। इस कार्य में उन सभी का सहयोग अपेक्षित है जिन्होंने उनके पत्रों को अपने पास संजो कर रखा है। कृपया उन सभी पत्रों की फोटो प्रति इस पते पर भेजने का कष्ट करें : श्री अतुल, विष्णु प्रभाकर जन्मशती समारोह समिति, ए-249, सेक्टर 46, नोएडा-201303 (उ.प्र.) ई-मेल : vpjs.samiti@gmail.com। एक स्मृति ग्रन्थ के प्रकाशन की भी योजना है जिसके लिए आपकी स्मृति लिखित रूप में आमन्त्रित है।

मेरा कच्चा चिट्ठा/इलाहाबाद

ब्रजमोहन व्यास

सम्पादन : लक्ष्मीधर मालवीय

ब्रजमोहन व्यास की बड़ी महत्त्वपूर्ण देन इलाहाबाद का विशाल और प्रसिद्ध संग्रहालय है। अकेले व्यास जी ने बिना पैसा-कौड़ी लगाए, केवल अपने अथक-अनवरत प्रयासों से यह विपुल सामग्री इकट्ठा की। यह संग्रहालय देश ही नहीं विदेशों के पुरा-संग्रहालयों के बीच अपना सानी नहीं रखता।

डॉ० बच्चन ने अपनी आत्मकथा में लिखा है—''रुचि व्यासजी की परिष्कृत थी—इलाहाबाद संग्रहालय के वह जन्मदाता थे। कहाँ-कहाँ से कैसे-कैसे सुन्दर और कलापूर्ण मूर्तियाँ वह उठा-चुरा कर लाए थे, इसका कच्चा चिट्ठा उन्होंने सरस्वती में एक बड़ी रोचक लेखमाला में खोला था। हिन्दी की गरिमा और उर्दू की रवानगी के लिए गंगाजमुनी घरेलू सरल इलाहाबादी शैली के वह उस्ताद थे।''

—*'नीड़ का निर्माण फिर'*

आकार	*पृष्ठ*
डिमाई	216

सजिल्द : 978-81-7124-919-0 • रु० 300.00
अजिल्द : 978-81-7124-927-5 • रु० 150.00

(पुस्तक के एक अध्याय का अंश)

एक

मेरा कच्चा चिट्ठा इस शीर्षक के पीछे एक छोटी-सी कहानी है। प्रयाग संग्रहालय के लिए चीज़ों के संग्रह करने में जो कठिनाइयाँ मुझे पड़ीं और जिन उपायों से मैंने एकत्र किया उन्हें लिपिबद्ध करने की बड़ी इच्छा थी ताकि वे सनद रहें और संग्रहकर्ताओं के काम आवें। परन्तु इस लेखमाला का हिन्दी में कोई उपयुक्त शीर्षक नहीं मिल रहा था। मैं अंग्रेजी के शब्द "confessions" के जोड़ का हिन्दी शब्द चाहता था क्योंकि जिन उपायों से इतना बड़ा संग्रह बे-पैसे-कौड़ी के या बहुत ही थोड़े व्यय से हो सका था उसके लिए 'कन्फ़ेशंस' ही उपयुक्त शब्द था। बहुतों से पूछा। किसी ने कुछ, किसी ने कुछ बताया परंतु कोई भी सुझाव मुझे नहीं जँचा। मैंने भी ज़िद पकड़ ली कि जब तक मुझे उपयुक्त शब्द न मिलेगा मैं क़लम न उठाऊँगा।

ऐसी ठान ठानना कोई समझदारी की बात न थी, परन्तु प्रायः संग्रहकर्ताओं के दिमाग़ की एक चूल ढीली रहती है जिससे संग्रह गतिमान बना रहता है। नगरपालिका से अवकाश ग्रहण करने पर मैं लीडर प्रेस में जेनरल मैनेजर हो गया।

एक दिन की बात है, वहाँ किसी कार्यवश हिन्दी साहित्य सम्मेलन के भूतपूर्व सभापति एवं हिन्दी-साहित्य के प्रकाण्ड विद्वान् पण्डित माखनलाल चतुर्वेदी जी आए। वे क्या आए मानों मेरा अभिवांछित अर्थ स्वयं आ गया। बातचीत के प्रसंग में मैंने अपनी ज़िद का ज़िक्र किया। वे मुसकराए। मुसकराने पर उनका अंग-सौष्ठव और निखर पड़ा। वे मुसकराते जाते थे और सोचते जाते थे। मुझे ऐसा लगा जैसे वे मेरे हठ के तोड़ने पर तुले हुए हों। आख़िरकार उन्होंने सोच-समझ कर कहा, ''मेरी समझ में कन्फ़ेशंस के लिए उपयुक्त हिन्दी होगी *कला की चोरी मैंने की तो थी!*''

मैंने शिष्टाचार के नाते उनके सामने उसका समर्थन तो किया परन्तु सच तो यह है कि मुझे उनका सुझाव तनिक भी नहीं रुचा। मैं 'कन्फ़ेशंस' के समान छोटा-सा हल्का-फुल्का शब्द चाहता था, उन्होंने उसकी थिसिस बना डाली। मुझे उसी समय संस्कृत के प्रकांड विद्वान् श्री वामन नारायण आप्टे का स्मरण हो आया जिन्होंने 'शटल कॉक' का अनुवाद किया था, 'यो हि लघु गुलिकाविशेषः दंडाहतो भूत्वा विनोदार्थ इतस्ततः प्रक्षिप्यते'। यदि वे संस्कृत का एक शब्द 'शिथिल काकः' बना डालते तो क्या बिगड़ जाता। चाहते अंत में जोड़ देते, 'गुलिका विशेषः'। अस्तु।

चतुर्वेदी जी के सुझाव की बारीकी न समझ पाने का कारण मैं अपनी हिन्दी की अनभिज्ञता ही कहूँगा। आख़िर उस्तादी गाने प्रायः जन-साधारण की समझ में नहीं ही तो आते! थोड़े ही वर्षों की बात है। उन दिनों मैं काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का एक्ज़ेकेटिव ऑफ़िसर था। किसी प्रसंगवश पण्डित जवाहरलाल नेहरू जी वहाँ आए थे। उनके सभाजनार्थ संगीत-मार्तंड पण्डित ओंकारनाथ जी ठाकुर का गाना हुआ था। ओंकारनाथ जी ने उस दिन अपनी संगीत-कला का अभूतपूर्व प्रदर्शन किया था जिसे प्रायः कोई नहीं समझ सका। यह समझ कर कि ऐसे दुरूह उस्तादी गाने से कहीं जवाहरलाल जी उकता न जायँ, पण्डित गोविंद मालवीय ने उनसे कहा कि इस राग को गाना बहुत मुश्किल है, सब नहीं गा सकते। पण्डित जवाहरलाल जी विनोदप्रिय तो हई हैं, तुरन्त बोल उठे, ''मेरी समझ में तो इसके गाने से इसका समझना ज़्यादा मुश्किल है।''

यही कारण रहा होगा कि माखनलाल चतुर्वेदी जी का सुझाव मेरी समझ में न आ सका। मैं भले आदमी की ज़बान की तरह अपनी अड़ पर क़ायम रहा। इधर हाल ही में मेरे परम मित्र कविवर ठाकुर गोपालशरण सिंहने कहा कि 'माइ कनफ़ेंशंस' के लिए 'मेरा कच्चा चिट्ठा' शायद मुझे पसंद आए। उनका सुझाव मुझे ग्राह्य हुआ। फलस्वरूप यह लेखमाला आपके सामने प्रस्तुत करता हूँ।

अपना 'कच्चा चिट्ठा' स्वयं खोलना एक बड़े जीवट का काम है बशर्ते कि वह सच्चा हो। इस सच्चाई का मुझे प्रमाणपत्र एक बड़े संभ्रांत व्यक्ति एवं उच्च पदाधिकारी से मिल चुका है। एक बार डॉ० कैलाशनाथ काटजू के अति निकट संबंधी और ग्वालियर राज्य के प्रधानमंत्री सर के०एन० हस्कर प्रयाग संग्रहालय देखने आए थे। संग्रहालय की निरीक्षण पंजिका पर जो टिप्पणी उन्होंने लिखी थी उसका कुछ अंश उद्धृत करता हूँ—

I trust I may be permitted to pay a tribute to the neoethics of which Mr. Vyas is the founder and a frank exponant. He has evolved principles which bid fair to enrich this Museum in a very short span of time. No course of conduct is taboo in his moral code, so long as it springs from the selfless desire to enhance the merits of his single handed creation. And it is great pleasure to me to own that. I am returning to Gwalior fired with some of Mr. Vyas's zeal and the happier for realizing the possibilities for individual achievement, given the will and the energy to carry through a big task.

इस सिद्धान्त में कोई नवीनता नहीं है। तिल की ओट पहाड़ है। इसे जितने संग्रहकर्ता हैं प्रायः सब करते हैं। फ़र्क़ इतना ही है कि कोई इसे स्वीकार करने का साहस नहीं करता। पता नहीं जब उनका अंतःकरण शुद्ध है तो वे तसलीम करने में क्यों झेंपते हैं! संग्रह करना भी एक बड़ा भारी आर्ट है। यह एक कला है। इसके बड़े-बड़े हथकंडे हैं। जो इन हथकंडों के प्रयोग में जितना प्रवीण है उतनी ही अधिक सफलता उसे संग्रह करने में मिलती है। इन हथकंडों को चाहे आप नियोएथिक्स कहें, या सिद्धान्त कहें, चाहे नई तहज़ीब कहें, बात एक ही है। इसमें अच्छे-बुरे का प्रश्न नहीं उठता।...

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन ,चौक, वाराणसी

www.vvpbooks.com

हिन्दी के ये विकट भट

एक अभिमानी लघु पत्रिका पढ़ी, तो मालूम हुआ कि उसमें हिन्दी के कई लेखक 'समय से मुठभेड़' में रत हैं। दूसरी-तीसरी लघु पत्रिकाओं में भी कई लेखक 'विकट भट' बने हुए दिखे।

कोई कवि 'समय से संवाद' में रत है, तो कई कवि अपनी कविताओं के जरिये 'अपने समय को उकेरने' के उद्यम में लगे हैं। कोई लेखक 'समाज सापेक्ष विचार' कर रहे हैं। कई लेखक सामान्यजन को 'जीवन संघर्ष के लिए प्रेरित' करने वाली कविताएँ ही लिखे जा रहे हैं। कई कहानीकार 'यथार्थ के अंधेरे की तस्वीर' खींचते पाए जा रहे हैं। कहीं 'सतत विरोध' किया जा रहा है, तो कहीं क्षोभ भरे सुर लगाए जा रहे हैं। कहीं कई लेखक 'बुनियादी बदलाव' के लिए आकुल हैं।

पत्रिकाओं को एक साथ पढ़ने पर लगता है कि ये लेखक हिन्दी क्षेत्र में न होकर या तो सोमालिया में हैं, या सीरिया में, या शायद बर्मा में हैं, या शायद अपने वीरगाथा काल में गोते लगा रहे हैं। चंद बरदाई तो मैदान भी गया था लड़ने, लेकिन अपने नए चंद बरदाई घर में बैठा हवा में मुक्के भाँजते हैं।

कविता की एक मात्र उपलब्धि है 'मुठभेड़'! यह ऐसी वीर मुद्रा है, जिसमें लेखक 'फिस्ट मुकाबला' करता नजर आता है या शून्य में किसी को पीटता नजर आता है। जिसे पीटता है, वह 'समय' है! दोष शमशेर का है। वह तो 'काल से होड़' करते हुए काल के गाल में समा गए, तब भी बहुत से नासमझ लेखक काल को ताल ठोकते नजर आते हैं! वह शमशेर, तो ये सवा शेर! हे ईश्वर जरा बचके रहियो इनके मुक्कन से। वीरमुद्रा को जरा नजदीक से निहारें—लेखक की मुट्ठी उठी है—अभी-अभी 'समय' को मुक्का मारा है। समय डरकर कहीं छिप गया है, इसीलिए दिखलाई नहीं देता। आप लेखक से पूछते हैं कि साथी, ये महान मुक्का किसे मारा है? इतने में वह दूसरा मुक्का हवा में मार देता है। पूछते डर लगता है, कहीं मार न दे!

उसका हाथ हवा में किसी मुक्केबाज की तरह तना है। यह उसकी कविता है। बताइए ऐसा वीर पिछले साहित्य में कभी हुआ? कुछ मूर्धन्य इस मुद्रा को विमोचित करते रहते हैं। हमारा नम्र निवेदन है कि जब गुनीजन जब मोचन-विमोचन किया करें, तो अपने लोचन खोल के किया करें। इतने नकली चंद बरदाई हिन्दी में किस काम के?

इस मुद्रा का अगला एक्शन होता है—काल से मुठभेड़ करते-करते कालातीत की उपाधि प्राप्त करना। कई कालातीत हो गए हैं। हिन्दी में हर किसी को कालातीत कह दिया जाता है। कई तो खुद को ही 'कालातीत' बताते हैं। एक से नाम पूछा तो बोलता है—मेरा नाम कालातीत है!

कल्लो, का कल्लोगे?

—सुधीश पचौरी (हिन्दुस्तान से साभार)

बंगाल का शारदीय साहित्य

हर वर्ष कोलकाता और आसपास हर गली-सड़क-चौराहे पर स्थित पत्र-पत्रिकाओं के स्टाल शारदीया यानी पूजा विशेषांकों से भर जाते हैं। बांग्ला साहित्य और बांग्ला पत्रकारिता की दुर्गा पूजा मनाने की यह अपनी अनूठी सांस्कृतिक शैली रही है। इसकी तैयारी बांग्ला पत्र-पत्रिकाएँ कई महीने पहले शुरू कर देती हैं। लेखकों को मार्च-अप्रैल में ही रचना देने के लिए बुक कर लिया जाता है। कुछ अखबार तो अपने बड़े उपन्यासकारों को पूजा विशेषांक में लिखने के लिए किसी शांत-मनोरम स्थान पर शानदार अतिथिगृह भी उपलब्ध कराते हैं। दरअसल बांग्ला-पत्र-पत्रिकाओं का एकमात्र उद्देश्य अपने पाठकों को बेहतर सामग्री उपलब्ध कराना होता है। बांग्ला के ये पूजा विशेषांक पाठकों की रुचि का ध्यान तो रखते हैं, साथ ही पाठकों की रुचि को उन्होंने बदला भी है। चालीस साल पहले तक पूजा विशेषांकों में सिर्फ उपन्यास होते थे। किन्तु आज उपन्यास, कहानी, कविता, आत्मकथा, किशोर साहित्य, निबन्ध, संस्मरण, आलोचना, रंगमंच, सिनेमा, कला से लेकर सेहत, खानपान, रहस्य-रोमांच, विज्ञान, अर्थशास्त्र, राजनीति—सबकुछ होता है इन विशेषांकों में। यानी पाठकों को जो-जो चाहिए, वह सब इनमें होता है। कवर पर दुर्गा की प्रतिमा और भीतर के पृष्ठों में पठन इच्छा की पूर्ति। क्या इसीलिए पूजा विशेषांक बांग्ला के पाठकों को आकर्षित करते हैं? बंगाल के संस्कृतिचेता लोगों के लिए इससे बड़ा उत्सव और क्या हो सकता है कि उन्हें अपने पसंदीदा साहित्य का संकलन बहुत किफायती दामों पर मिल जाता है। इसीलिए हर बांग्लाभाषी परिवार अधिक से अधिक पूजा विशेषांक खरीदना चाहता है, क्योंकि उनके लिए यह साल भर की पठनीय सामग्री का अनुपम उपहार होता है। बांग्ला में पूजा विशेषांकों की समृद्ध परम्परा रही है। हर वर्ष अक्टूबर के आरम्भ में बड़ी-छोटी लगभग सभी बांग्ला पत्र-पत्रिकाओं के सौ से अधिक पूजा विशेषांक निकलते हैं। किसी खास समय (शरद उत्सव) पर विशेषांकों के जरिए इतने विपुल साहित्य का प्रकाशन दुनिया में और कहीं किसी अन्य भाषा में नहीं होता।

बांग्ला में शारदीय विशेषांक की शुरुआत 1928 ई० में आनंद बाजार पत्रिका ने की थी। अब तक यह परम्परा वटवृक्ष का रूप ले चुकी है। बांग्ला की सिर्फ मुख्यधारा की पत्र-पत्रिकाएँ ही पूजा विशेषांक नहीं निकालतीं, लघु पत्रिकाएँ भी इस दौड़ में शामिल हैं और वे भी पाठकों द्वारा हाथों-हाथ ली जाती हैं। बांग्ला की लघु पत्रिका 'प्रसाद' में छपकर ही महाश्वेता देवी का उपन्यास 'हजार चौरासीर माँ' पहले-पहल चर्चा में आया था।

ये शारदीय पूजा विशेषांक समकालीन बांग्ला साहित्य की तस्वीर ही नहीं प्रस्तुत करते, बल्कि बांग्ला लेखकों की उर्वर रचनात्मकता से यह भी जाहिर होता है कि उनके पाठकों की पठनवृत्ति में निरन्तरता है। यह निरन्तरता सिद्ध करती है कि शब्द सारथियों की यात्रा से बांग्ला पाठकों का जुड़ाव कितना आन्तरिक और गहरा है। बांग्ला पाठकों की जागरूकता और बौद्धिकता असंदिग्ध है। इन पाठकों ने ही, पूजा विशेषांकों या शारदीया साहित्य के वैशिष्ट्य को बचाए रखा है।

—कृपाशंकर चौबे (जागरण से साभार)

पृष्ठ 1 का शेष

कि आपको लगेगा जैसे ब्रह्मसूत्र
पढ़ रहा है मुक्तिबोध को
और शाकुंतल का हिरन
कुछ कह रहा है पद्मावत के तोते से
और बीजक का कोई पद
किसी पोथी से छिटककर
मनु से बहस कर रहा है
और रासो की कोई सबसे पुरानी प्रति
धीरे-धीरे गुनगुना रही है
किसी युवा कवि की अप्रकाशित कोई कविता

हैरान न हों आप
यही आपसदारी ज़िन्दा रखती है पांडुलिपियों को
खो जाने के बाद भी

—केदारनाथ सिंह

अध्येताओं, पुस्तकालयों, छात्रों, शिक्षा संस्थाओं हेतु

साहित्यिक तथा विभिन्न विषयों की हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत पुस्तकों का विशाल संग्रह

तीन हजार वर्ग फुट में विशाल शोरूम

विश्वविद्यालय प्रकाशन

विशालाक्षी भवन, चौक
(चौक पुलिस स्टेशन परिसर के पार्श्व में)
वाराणसी – 221 001 (उ०प्र०)
Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082
E-mail : vvp@vsnl.com & sales@vvpbooks.com
Website : www.vvpbooks.com

बाबा नीब करौरी के अलौकिक प्रसंग

बच्चन सिंह

बाबा समसामयिक संतों में सर्वोपरि थे। कुछ लोग उन्हें साक्षात् हनुमानजी का अवतार मानते थे तो कुछ संतों का कहना था कि नीब करौरी महाराज को हनुमानजी की सिद्धि है। वह कुछ भी कर सकते हैं। यदि मृत व्यक्ति को पुनर्जीवन देने की क्षमता किसी में है तो वह एकमात्र संत हैं—नीब करौरी बाबा।

बाबा ने कथा, प्रवचन, आडम्बर, प्रचार-प्रसार से दूर रह कर दीन-दु:खियों की सेवा में अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया। बाबा नीब करौरी का सम्पूर्ण जीवन अलौकिक क्रिया-कलापों से भरा हुआ है।

आकार	*पृष्ठ*
डिमाई	544

अजिल्द : 978-81-7124-856-8 • रु० 300.00

(पुस्तक के एक अध्याय का अंश)

एक अमेरिकी डॉक्टर लैरी ब्रिलिएंट महाराज के परम भक्त थे। इसे महाराजजी के आश्रम में डॉक्टर अमेरिका कहकर पुकारा जाता था। यद्यपि इसका एक और नाम सुब्रह्मण्यम् भी रखा गया था। उसकी पत्नी गिरिजा ने उसे महाराजजी से मिलवाया था। महाराजजी ने इस डॉक्टर और विश्व स्वास्थ्य संगठन के माध्यम से परोक्ष रूप से चेचक उन्मूलन कार्यक्रम चलवाया।

एक दिन यह डॉक्टर महाराजजी के कमरे में आकर बैठा तो महाराजजी ने इससे पूछा, ''डॉक्टर, डॉक्टर अमेरिका, तेरे पास कितना पैसा है ?''

डॉक्टर ने बताया कि पाँच सौ डॉलर हैं पर वे पूछते ही रहे, ''नहीं, नहीं, सच में तेरे पास कितने पैसे हैं ?'' डॉक्टर अपनी बात पर अड़ा रहा कि उसके पास कुल पाँच सौ डालर ही हैं।

महाराजजी ने कहा, ''हाँ, हाँ ठीक है, पर यह तो भारत में हैं। अमेरिका में तेरे पास कितने पैसे हैं।''

डॉक्टर के मन में विचार आया कि महाराजजी शायद मन्दिर बनवाने के लिए पैसा चाह रहे हैं। लेकिन उन्होंने अपने विचार पर काबू किया और बोले, ''अमेरिका में भी मेरे पास सिर्फ पाँच सौ डॉलर ही हैं।'' फिर डॉक्टर ने कहा, ''परन्तु इसके साथ ही मेरे ऊपर उस मेडिकल कॉलेज का भारी कर्ज है जहाँ से मैंने डॉक्टरी पास की थी। मुझे मेडिकल कॉलेज में पढ़ने के लिए काफी पैसा उधार लेना पड़ा था। भले ही मेरे पास एक हजार डॉलर हैं लेकिन इससे ज्यादा कर्ज चुकाना है।''

महाराजजी ने कहा, ''क्या कहा! तेरे पास पैसा नहीं है ? तू डॉक्टर नहीं है ?'' इसी तरह की बातें माँ भी कहा करती थीं। महाराजजी ने मेरी ओर देखा और खूब हँसे, ''तू डॉक्टर नहीं है·····यू नो (एन ओ) डॉक्टर·····।'' यही कहते रहे।

डॉक्टर की समझ में महाराजजी की बातें नहीं आईं। उन्होंने कहा, ''तू टीके लगाएगा, तू जाकर गाँवों में टीके लगाएगा।''

''क्या आप यहाँ किसी को टीके लगाने के लिए कह रहे हैं ?'' डॉक्टर ने पूछा।

''डॉक्टर अमेरिका—यू एन ओ डॉक्टर। संयुक्त राष्ट्रसंघ (यू०एन०ओ०) डॉक्टर। तू संयुक्त राष्ट्र के लिए काम करेगा। तू गाँव में जाने वाला है और टीके लगाएगा।'' डॉक्टर की ओर देखते हुए महाराजजी ने कहा।

इस डॉक्टर ने एक बार अपने कुछ परिचितों से विश्व स्वास्थ्य संगठन में नौकरी के बारे में जानकारी प्राप्त की थी। सभी का कहना था कि डब्लू०एच०ओ० किसी प्रकार की नई भर्ती नहीं कर रहा है। इसी बीच अगले कुछ हफ्तों तक महाराजजी पूछते रहे—''तुझे तेरी नौकरी मिल गई ?'' डॉक्टर हमेशा नकारात्मक उत्तर देता और एकाएक उस विषय को बदल देता।

एक दिन महाराजजी ने डॉक्टर से कहा, ''तू डब्लू०एच०ओ० में जा, तुझे नौकरी मिल जाएगी।'' महाराजजी का आदेश मिलने पर डॉक्टर विश्व स्वास्थ्य संगठन के नई दिल्ली स्थित कार्यालय में गया और उस आदमी से मिला जिससे उसने पहले बात की थी। यह व्यक्ति बहुत दयालु स्वभाव का था किन्तु उसने बताया कि डब्लू०एच०ओ० में कोई जगह खाली नहीं है। आवश्यकता पड़ने पर वे लोग भारत के बाहर के चिकित्सा कॉलेजों और चिकित्सा संस्थाओं के अनुभवी सलाहकारों की नियुक्ति ही करते हैं। उसने कहा, ''हाँ, एक कार्यक्रम है। यदि वे कभी कुछ कर सकें तो बड़ी अच्छी बात होगी लेकिन इसमें शक है कि उन्हें अपने कठिन लक्ष्य की प्राप्ति होगी। यह है चेचक उन्मूलन कार्यक्रम। भारत सरकार तो इस समय इस कार्यक्रम को आगे बढ़ाने का दृढ़ता से विरोध कर रही है। उसके पास अन्य समस्याएँ हैं, जैसे—मलेरिया, और परिवार कल्याण। चेचक को वे उच्च प्राथमिकता नहीं दे रहे हैं। पर मैं तुम्हें फ्रांस की डॉक्टर निकोल गैसेट के पास ले चलूँगा जो उस कार्यक्रम को निर्देशित कर रही हैं।''

डॉ० गैसेट से मिलने का समय तय हो गया। फिर डॉक्टर महाराजजी के एक भक्त बर्मन के पास लौट आया। उनका सूट उधार लिया और एक सस्ती टाई खरीद ली। अपने बालों को रबर से कसा और उसे सफेद के अन्दर छिपा लिया। डॉक्टर के शरीर पर मँगनी की यह पोशाक भद्दी लग रही थी क्योंकि उसके ऊपर फिट नहीं हो रही थी। डॉ० गैसेट से मिलने डॉ० अमेरिका नियत समय पर पहुँच गये। इनकी वेश-भूषा देखकर डॉ० गैसेट ने इन्हें हिप्पी समझ लिया और बोलीं, ''हमें खेद है कि हमारे पास नौकरी के लिए कोई जगह नहीं है। फिर भी आपसे मिलकर हमें काफी प्रसन्नता हुई।''

डॉक्टर लौटकर महाराजजी के पास आया तो महाराजजी ने पूछा, ''तुझे नौकरी मिल गई ?''

''नहीं महाराजजी, अब हमें इस नौकरी की आशा छोड़ देनी चाहिए।''

दो सप्ताह गुजर गए। एक दिन महाराजजी ने डॉक्टर से कहा, ''डब्लू०एच० ओ० में पुन: जा।''

डॉक्टर महाराजजी का आदेश मिलने पर विश्व स्वास्थ्य संगठन के कार्यालय में फिर गया। सबसे पहले उसने अपने परिचित नेड से बात की। उसकी राय के मुताबिक डॉक्टर ने इस बार एक भिन्न प्रकार का प्रपत्र टाइप कराया, उसे भरा और अन्दर भेजा। निकोल से फोन पर बात भी की। पर फिर वही ढाक के तीन पात। उत्तर मिला, कोई जगह नहीं।

डॉक्टर पुन: लौट आया।

इस घटना के एक सप्ताह बाद महाराजजी ने फिर नौकरी के बारे में पूछा। मैंने उन्हें हाल बताया तो उन्होंने कहा, ''निकोल से फोन पर बात करो।''

डॉक्टर इस बारे में अब कोई पहल नहीं करना चाहता था लेकिन चूँकि महाराजजी का आदेश था अतएव उसने अनमने ढंग से निकोल को फोन मिलाया। निकोल का वही पुराना जवाब मिला, ''चेचक उन्मूलन कार्यक्रम का विस्तार करने की कोई योजना नहीं है। अमेरिकी डॉक्टरों को नौकरी में लेने की भी कोई सम्भावना नहीं है। इस कार्य में आपकी रुचि के लिए आपको धन्यवाद।''

डॉक्टर ने निकोल को वृंदावन से फोन किया था।...

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन ,चौक, वाराणसी

www.vvpbooks.com

अत्र-तत्र-सर्वत्र

ब्रौंक्स हाई स्कूल ऑफ साइंस

न्यूयॉर्क सिटी का यह हाई स्कूल इन दिनों सुर्खियों में है, क्योंकि पिछले दिनों इस स्कूल के एक पूर्व छात्र रॉबर्ट लेफकोविट्ज को इस वर्ष रसायन विज्ञान के क्षेत्र में नोबल पुरस्कार दिया गया है। यह कदाचित अकेला ऐसा हाईस्कूल है, जिसके आठ पूर्व छात्रों को विज्ञान के क्षेत्र में नोबल पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

वर्ष 1938 में स्थापित यह स्कूल अमेरिका के आम सार्वजनिक हाई स्कूलों की तरह ही है, लेकिन इसे विज्ञान की प्रारम्भिक शिक्षा के लिए विशेष रूप से जाना जाता है। गणित एवं विज्ञान की पढ़ाई के लिए प्रसिद्ध इस स्कूल में मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान की भी पढ़ाई होती है।

मोरिस मेइस्टर के प्रयासों से वर्ष 1946 से इसमें लड़कियों को भी दाखिला मिलने लगा। उन्होंने इस स्कूल पर अपनी गहरी छाप छोड़ी थी। यह स्कूल नोबेल के लिए ही नहीं (जिसे पाने वाले छात्रों के चित्र वाला एक पोस्टर दरवाजे पर लगा है), बल्कि छह पूर्व छात्रों द्वारा पुलित्जर पुरस्कार प्राप्त करने के लिए भी जाना जाता है।

राष्ट्रपति भवन से विदा हुई अंग्रेजियत

औपनिवेशिक काल में उच्च पदस्थ लोगों के सम्मान में प्रयोग किया जाने वाला वाक्यांश 'हिज एक्सीलेंसी' राष्ट्रपति भवन से विधिवत विदा हो गया है। राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने देश और विदेश में उच्च पदाधिकारियों से मुलाकात के समय प्रयोग किये जाने वाले नये प्रोटोकॉल सेट को स्वीकृति दे दी है। अब देश में होने वाले कार्यक्रमों और राष्ट्रपति से भारतीय अधिकारियों की मुलाकात के समय 'हिज एक्सीलेंसी' का प्रयोग नहीं किया जायेगा। हिन्दी में 'महामहिम' के स्थान पर माननीय राष्ट्रपति महोदय या 'राष्ट्रपतिजी' का प्रयोग होगा। इसके अतिरिक्त भारतीय परम्परा के अनुसार अब नाम के पहले 'श्री' या 'श्रीमती' का प्रयोग किया जायेगा।

भारतीय सैन्य अकादमी को मिला नया गीत

जावेद अख्तर के गीत 'भारत माता तेरी कसम तेरे रक्षक रहेंगे हम....' के बाद अब भारतीय सैन्य अकादमी (आइ०एम०ए०) को एक और गीत मिल गया है। नये गीत के बोल हैं, 'आदर्श हिन्द के सैनिक बनकर दिखाएँगे हम....'। अकादमी के स्थापना दिवस कार्यक्रम में लाइट एंड साउण्ड शो के बाद जब आइ०एम०ए० के चैटवुड हॉल में पहली बार गीत बजा तो सारे जवानों की बाँछें खिल गईं। कैडेट्स जोश से भर उठे और उपस्थित अन्य लोगों की भावनाएँ भी देश के लिए उबाल मारने लगी। अब यह गीत हर विशिष्ट अवसर पर सेना की शान में सुना जायेगा।

डिस्कवरी साइंस अब हिन्दी में भी

साइंस, फिक्शन और अन्य तकनीकी कार्यक्रमों में हिन्दी भाषी चैनलों की बढ़ती लोकप्रियता को देखते हुए डिस्कवरी नेटवर्क भी अब अपने डिस्कवरी साइंस चैनल के हिन्दी में प्रसारण के लिए तैयार है। यह चैनल अब 24 घण्टे अंग्रेजी के साथ साथ हिन्दी भाषा में भी उपलब्ध होगा।

नेपाली प्रकाशक बनाम तसलीमा

बांग्लादेश की चर्चित और विवादित लेखिका तसलीमा नसरीन ने नेपाल के कई प्रकाशकों पर सर्वोच्च अदालत में मुकदमा दाखिल किया है। इस समय नेपाल में उनके उपन्यास अपरपक्ष, फेरा, निमंत्रण और लज्जा की धूम मची है, क्योंकि नेपाली प्रकाशन संस्थाओं ने बिना अनुमति लिए तसलीमा नसरीन के कई चर्चित उपन्यासों का नेपाली अनुवाद प्रकाशित किया है।

त्रिपुरा विश्वविद्यालय संरक्षित करेगा चकमा पाण्डुलिपियों को

त्रिपुरा विश्वविद्यालय ने चकमा जनजाति के लोगों के पास पड़ीं सैकड़ों महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपियों को संरक्षित करने की पहल की है। ये पांडुलिपियाँ करीब एक सदी पुरानी हैं और मूलनिवासी जनजातियों, उनकी संस्कृति, संगीत, हर्बल औषधियों तथा हीनयान बौद्धवाद जैसे अलग अलग विषयों पर हैं। इन पाण्डुलिपियों की खासियत यह है कि इन्हें पशुओं के चमड़े से मढ़ा गया है। विशेषज्ञों की राय में, लम्बे समय तक सुरक्षित रखने के लिए इन्हें पशुओं के चमड़े से मढ़ा गया होगा। इतिहासकार सत्यदेव पोद्दार ने कहा कि हिरण, अजगर, भालू और तेंदुए जैसे पशुओं की खाल उतार कर उनका उपयोग इन पाण्डुलिपियों को मढ़ने के लिए किया गया। पोद्दार त्रिपुरा विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग और पाण्डुलिपि केन्द्र के निदेशक हैं।

बारकोड

विगत 7 अक्टूबर को बारकोड के पेटेंट के साठ वर्ष पूरे हो गए। बारकोड किसी आँकड़े या सूचना को मशीन से पढ़े जाने योग्य रूप में निरूपित करने का एक प्रभावी तरीका है। अपने मूल रूप में बारकोड के लिए समानान्तर रेखाओं एवं उनके बीच के अंतराल का उपयोग किया जाता था। वर्ष 1940 में फिलाडेल्फिया स्थित ड्रैक्सेल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के दो छात्र बर्नाड सिल्वर एवं नॉर्मन जोसेफ बुडलैंड ने बारकोड की खोज की थी। सात अक्टूबर, 1952 को उन्हें इसका पेटेंट मिला था। लेकिन उस वक्त लेजर स्कैनिंग टेक्नोलॉजी अस्तित्व में नहीं थी। इसलिए 1974 तक उनकी इस महान खोज का कोई फायदा नहीं उठाया जा सका। परिणामस्वरूप उन दोनों युवा वैज्ञानिकों को न केवल तंगी में जीवन बिताना पड़ा, बल्कि थोड़े से पैसों के लिए उन्हें अपना पेटेंट भी बेचना पड़ा।

हालाँकि बारकोड का पहली बार प्रयोग 'रेलरोड कारों' (ट्रेन की बोगियाँ) के नामांकन के लिए किया गया। लेकिन 26 जून, 1974 को ओहियो में सुबह आठ बजकर एक मिनट पर पहली बार एक च्यूइंगम के पैकेट पर बारकोड को लेज़र स्कैनर से पढ़ा जा सका। आज स्थिति यह है कि हर तरह के उत्पाद के लिए बारकोड का प्रयोग किया जा रहा है। प्रतिदिन लगभग पाँच अरब बारकोड दुनिया में स्कैन किये जाते हैं। हमारे देश में 1998 से नेशनल इन्फार्मेशन इंडस्ट्रियल वर्कफोर्स ने सभी उत्पादों पर बारकोड का प्रयोग अनिवार्य कर दिया। टाटा ग्रुप एवं आई०टी०सी० ने कर्मचारियों का रिकॉर्ड रखने के लिए पहले बारकोड का प्रयोग किया, फिर इसका सामान पर भी प्रयोग करना शुरू कर दिया।

ऑस्ट्रेलिया के स्कूलों में पढ़ाई जायेगी हिन्दी

ऑस्ट्रेलिया ने अपनी महत्वाकांक्षी योजना की घोषणा की है, जिसके अन्तर्गत देश के स्कूलों में हिन्दी पढ़ाई जायेगी। हाल ही में अपने पहले भारत दौरे पर आयी ऑस्ट्रेलियाई प्रधानमंत्री जूलिया गिलार्ड ने कहा कि एशियाई देश लगातार प्रगति कर रहे हैं और अपने स्कूलों में इन भाषाओं को पढ़ाकर उनके साथ बेहतर सम्पर्क एवं सम्बन्ध स्थापित किया जायेगा। उन्होंने कहा कि सभी ऑस्ट्रेलियाई स्कूल हिन्दी, मंदारिन, इंडोनेशियाई और जापानी भाषा की पढ़ाई के लिए एशिया के कम से कम एक स्कूल के साथ मिलकर काम करेंगे।

कनाडा में बढ़ रहा पंजाबी-बांग्ला का प्रभाव

कनाडा में दो भारतीय भाषाओं पंजाबी और बांग्ला का प्रभाव बढ़ता जा रहा है। आँकड़ों के अनुसार कनाडा की कुल जनसंख्या का पाँचवाँ हिस्सा यहाँ की आधिकारिक भाषाओं अंग्रेजी और फ्रेंच का प्रयोग नहीं करता है। अप्रवासियों में पंजाबी, हिन्दी और बांग्ला बोलने वालों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। जनसंख्या रिपोर्ट-2011 के अनुसार देश में लगभग 66,30,000 लोग अंग्रेजी और फ्रेंच से अलग किसी अन्य भाषा का प्रयोग करते हैं। इनमें वे लोग भी सम्मिलित हैं जो इन दोनों भाषाओं के अलावा किसी तीसरी भाषा का भी प्रयोग करते हैं।

हिन्दी-क्षेत्रीय भाषाओं में भी होगी पॉलीटेक्निक की पढ़ाई

इंजीनियरिंग की शिक्षा में बदलाव की दिशा में बड़ा कदम उठाते हुए केन्द्र सरकार ने पालीटेक्निकों में हिन्दी और क्षेत्रीय भाषाओं में पढ़ाई शुरू करने की तैयारी कर ली है। इस कवायद के पीछे उद्देश्य यह है कि अंग्रेजी नहीं

समझ पाने वाले दसवीं पास छात्रों को पॉलीटेक्निक में पढ़ाई का अवसर मिले।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड (केब) की बैठक में इस प्रस्ताव को रखने जा रहा है। लम्बे समय से इंजीनियरिंग की पढ़ाई हिन्दी एवं क्षेत्रीय भाषाओं में कराने की माँग हो रही है।

हाल ही में इस विषय पर आयोजित उच्च स्तरीय समीक्षा बैठकों में पाया गया कि पॉलीटेक्निक की पढ़ाई अंग्रेजी में होने के कारण छात्र नहीं मिल रहे इसलिए सरकार चाहती है कि हिन्दी एवं क्षेत्रीय भाषाओं में पढ़ाई शुरू की जाय। केब की बैठक में इस विषय में भी राय ली जाएगी कि हिन्दी और क्षेत्रीय भाषाओं में पॉलीटेक्निक के कोर्स को कैसे तैयार किया जाय।

'डॉ० रामविलास शर्मा मार्ग'

पिछले दिनों महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा में कुलपति विभूति नारायण राय, कुलसचिव डॉ० के०जी० खामरे की उपस्थिति में निर्माणाधीन साहित्य विद्यापीठ भवन के प्रांगण में स्थापित विख्यात हिन्दी आलोचक डॉ० रामविलास शर्मा की प्रतिमा का अनावरण तथा उत्तरी परिसर में बनाया गया 'डॉ० रामविलास शर्मा मार्ग' का उद्घाटन, डॉ० शर्मा के पुत्र डॉ० विजय मोहन शर्मा द्वारा किया गया।

पॉलि में विदेशी छात्र ने लहराया परचम

वाराणसी। सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के पॉलि व थ्रेरवाद में म्यांमार निवासी विदेशी छात्र पज्जिन्द्रिया भिवंस ने परचम लहराया है। इस विदेशी छात्र ने आचार्य की परीक्षा में सर्वोच्च अंक प्राप्त कर मेरिट सूची में अपना नाम दर्ज करा लिया है।

अब हिन्दी में भी पुराण

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी अब पुराण को आम लोगों से जोड़ने जा रहा है। इसके अन्तर्गत विस्तृत पुराण को 100 पन्नों में समेटते हुए इसके हिन्दी भाषा में अनुवाद का महत्त्वपूर्ण निर्णय लिया गया है, ताकि संस्कृत न जानने वाले लोग भी पुराणों की महत्ता व संस्कृति समझ सकें।

पुराण में सृष्टि की रचना, प्रलय, लोक कथाएँ, लोक भाषाएँ, सांस्कृतिक धरोहर, तीर्थ, आयुर्वेद से जुड़े विषय शामिल हैं। यह पुरानी बातों की कथाओं के रूप में रोचक प्रस्तुति है। ऐसे में महत्त्वपूर्ण तथ्यों को संक्षेप कर सौ पन्नों में आम लोगों को जानकारी देने का प्रयास होगा।

अमेरिकी प्रवेश परीक्षा में बेंगलूर के छात्र को सौ प्रतिशत अंक

अमेरिकी कॉलेजों में पढ़ाई के लिए होने वाली प्रवेश परीक्षा में बेंगलूर के छात्र निश्चल नाधामुनि ने सौ प्रतिशत अंक प्राप्त कर भारतीय मेधा का दुनिया में एक बार फिर लोहा मनवाया है। माल्या अदिति इंटरनेशनल स्कूल में 11वीं के छात्र निश्चल को स्कॅलैस्टिक एप्टीट्यूड टेस्ट (सैट) परीक्षा में 2400 में पूरे 2400 अंक मिले हैं। स्कूल के अनुसार निश्छल को तीनों विषय मैथमैटिक्स, क्रिटिकल रीडिंग और राइटिंग सब्जेक्ट्स में 800 अंक मिले। हर साल एक अमेरिकी एन०जी०ओ० 'कॉलेज बोर्ड' वहाँ के कॉलेजों में पढ़ाई के लिए सैट प्रवेश परीक्षा आयोजित करता है। इस टेस्ट के जरिये कॉलेज में प्रवेश की छात्र की तैयारी परखी जाती है।

लंदन में नीलाम होंगे बापू के दो पत्र

महात्मा गाँधी द्वारा लिखे गए दो पत्रों की नीलामी दिसम्बर में लंदन में होगी। सोथबी की नीलामी में रखे जाने वाले इन पत्रों में से एक को महात्मा गाँधी ने रवीन्द्रनाथ टैगोर के बड़े भाई द्विजेन्द्रनाथ को लिखा था।

बापू के पत्रों के अतिरिक्त नीलामी में भारतीय संविधान की एक दुर्लभ प्रति भी शामिल होगी। इस नीलामी में लगभग 200 चीजों की बोली लगाई जाएगी, इसमें अंग्रेजी साहित्य, इतिहास, बच्चों से जुड़ी किताबें भी शामिल हैं। वर्ष 1922 में अहमदाबाद की साबरमती जेल में बन्द किए जाने के बाद गाँधी ने द्विजेन्द्रनाथ को एक खत भेजा था जिसमें उन्होंने खुशी जताई है कि उनको सजा ऐसे समय में हुई है, जब उन्हें लगता है कि वे इसके लिए पूरी तरह तैयार हैं। गाँधी ने द्विजेन्द्रनाथ को पेंसिल से लिखे दो पेज के पत्र में यह भी कहा कि 'यंग इंडिया' को उनके समर्थन के संदेश भेज दें।

राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय खोलेगा सौ नए अध्ययन केन्द्र

देश के दूरस्थ स्थानों तक शिक्षा का प्रचार-प्रसार करने के उद्देश्य से उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय जनवरी से उत्तर प्रदेश में सौ अध्ययन केन्द्र खोलने की शुरुआत करेगा। यह सभी अध्ययन केन्द्र भौगोलिक और सामाजिक रूप से पिछड़े क्षेत्रों में खुलेंगे। इन केन्द्रों पर विश्वविद्यालय की ओर से पुस्तकालय आदि की सहायता उपलब्ध कराई जाएगी। विद्यार्थियों को घर पर ही पाठ्यसामग्री उपलब्ध कराने की भी योजना पर कार्य किया जा रहा है।

मॉरीशस में पढ़ाई जाएगी भारतीय संस्कृति

देश में भले ही भारतीय संस्कृति के अध्ययन के प्रति लोगों का रुझान कम हो रहा है लेकिन विदेशों में इसका क्रेज बढ़ रहा है। मॉरीशस इसी में से एक है। यहाँ भारतीय संस्कृति पढ़ाई जाएगी। विशेष बात यह है कि मॉरीशस में पढ़ाया जाने वाला भारतीय संस्कृति का पाठ्यक्रम सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी ने बनाया है।

भारतीय संस्कृति व धर्म से जुड़े अधिकांश विषय आज भारत में ही मानों उपेक्षित हो गए हैं। पुरोहित का कार्य भी इनमें से एक है। मॉरीशस में ऐसा नहीं है। मॉरीशस के टेरीटरी एजुकेशन कमीशन ने पाठ्यक्रम में भारतीय संस्कृति को शामिल करने का निर्णय लिया है।

विकिपीडिया पर शैक्षणिक वीडियो

विश्व के सबसे बड़े ऑनलाइन एनसाइक्लोपीडिया विकिपीडिया ने एक नई योजना की शुरुआत की है। इसके अन्तर्गत पंजीकृत उपयोगकर्ता अब वेबसाइट पर वीडियो भी अपलोड कर सकेंगे। इस सुविधा का उद्देश्य लोगों को अधिक से अधिक भाषाओं में नि:शुल्क शैक्षणिक वीडियो उपलब्ध कराना है। अभी तक विकिपीडिया पर दी गई सारी जानकारी केवल लिखित रूप में ही उपलब्ध है। वर्तमान में लगभग ढाई करोड़ लोग प्रतिदिन विकिपीडिया के अकेले अंग्रेजी भाषा के पृष्ठों को खोलते हैं। सबसे पहले अंग्रेजी में विकिपीडिया की शुरुआत 15 जनवरी, 2001 को हुई। इसके बाद वर्ष 2003 में विकिपीडिया की शुरुआत हिन्दी में भी हो गई। आमतौर पर इसे फ्री इनसाइक्लोपीडिया कहा जाता है। यह अपनी सूचनाओं को साझा करने के लिए कोई पैसा नहीं लेती है। अभी विकीपीडिया के साढ़े तीन करोड़ से ज्यादा रजिस्टर्ड यूजर हैं। इसको विकीपीडिया फाउंडेशन चलाता है। इसकी शुरुआत करने का श्रेय जिमी वेल्स और लैरी संगर को है। इसे समाचारों का बड़ा केन्द्र माना जाता है।

भारतीयों को विशेष छात्रवृत्ति

नई दिल्ली। भारतीय छात्रों को आकर्षित करने के लिए आयरलैण्ड ने विशेष छात्रवृत्ति लाने की योजना बनाई है। 16 विश्वविद्यालयों के प्रतिनिधियों के साथ भारत दौरे पर आए आयरलैण्ड के शिक्षा मंत्री सिएरन कैनन ने बताया कि उनका देश 2013 में भारतीय छात्रों को 22 तरह की छात्रवृत्तियाँ देगा। इसके अन्तर्गत फीस माफी के अलावा छात्रों को एक वर्ष के लिए सात लाख रुपये का भत्ता भी दिया जायेगा।

इंटरनेट के नये वर्जन के एड्रेस भारत में भी जारी

नई दिल्ली। इंडियन रजिस्ट्री फॉर इंटरनेट नेम्स एंड नंबर्स (आइआरआइएनएन) ने इंटरनेट एड्रेस का अगला वर्जन 'आइपीवी 6' (इंटरनेट प्रोटोकोल वर्जन 6) जारी करना प्रारम्भ कर दिया है। इंटरनेट एड्रेस का वर्तमान प्रारूप 'आइपीवी4' (इंटरनेट प्रोटोकोल वर्जन 4) की संख्या सीमित है और सेवा प्रदाता अक्सर कई उपभोक्ताओं को एक ही एड्रेस दे देते हैं। इससे इंटरनेट इस्तेमाल करने वाले की पहचान मुश्किल हो जाती है।

स्तुति नति प्रणति

नथमल केड़िया

सुललित निबन्धकार केडियाजी मूलतः 'सांस्कृतिक साहित्यकार' हैं किन्तु भगवान व्यास की सरणि का अनुसरण करती हुई भाव, भक्ति और करुणा से परिप्लावित इनकी प्रस्तुत-कृति का कथ्य श्रेष्ठतम मानवावतार चन्द्रद्वय—रामचन्द्र और कृष्णचन्द्र एवं उनके परिजन और प्रियजन यथा—सीता, मारुति, भीष्म, उद्धव और गोपियों के पावन चरित्रों से मण्डित है।

राम और कृष्ण का मुक्तिदायक प्रभाव निर्विवाद है किन्तु रचनाकार का अभीष्ट उनके मर्यादा पुरुषोत्तम एवं लीला पुरुषोत्तम स्वरूप को व्याख्यायित करना है। रचनाकार ने राम को 'पथिकृतऋषि' और कृष्ण को यह कहकर परिभाषित किया है कि नृत्य, गीत, वादित्र, सौन्दर्य, वाग्मिता, राजनीति, योग, अध्यात्म ज्ञान सबके एकत्र समवाय का नाम ही कृष्ण है।

आकार	*पृष्ठ*
डिमाई	80

अजिल्द : 978-81-7124-912-1 • रु० 80.00

(पुस्तक के एक अध्याय का अंश)

त्रेतायुग के बाद हमें द्वापरयुग में हनुमानजी के दर्शन उस समय होते हैं जब महाबली भीम महारानी द्रौपदी की इच्छापूर्ति के लिए सौगन्धिक कमल लाने के लिए गन्धमादन पर्वत पर आए हैं। उस समय ये अपने भाई का किसी के द्वारा तिरस्कार नहीं हो जाय इसके लिए स्वर्ग का रास्ता रोक कर लेटे हैं। भीमसेन उस समय अपने बल के घमण्ड में चूर-चूर हो रहे थे पर हनुमानजी की पूँछ को साधारण-सी भी नहीं हटा सके और उसके बाद प्रणत हो उनसे उनका परिचय पूछा तो जानकर उन्हें सुखद आश्चर्य हुआ कि मैं बड़े भाई हनुमान के सम्मुख हूँ। हनुमान ने भी भीम को छोटे भाई का वात्सल्य दिया। यहाँ यह द्रष्टव्य है कि इनके पाँच छोटे सहोदर भाई थे जिनके नाम क्रमशः केतुमान, गतिमान, मतिमान, श्रुतिमान व धृतिमान हैं। ये सभी गृहस्थ थे उनके भी सन्तान थीं। वे सभी हनुमानजी की तरह आध्यात्मिक थे। (ब्रह्माण्ड पुराण) इन्होंने भीम के आग्रह पर उसे समुद्र-लंघन के समय का अपना विशालकाय रूप भी दिखाया जो इतना भयंकर था कि देखकर भीम की भय के मारे आँखें बन्द हो गईं, रोमांच होने लगा। फिर भीम ने प्रार्थना की—प्रभो! आपके शरीर का विशाल प्रमाण प्रत्यक्ष देख लिया, महापराक्रमी वीर। अब आप स्वयं ही अपने शरीर को समेट लीजिये। महाभारत में प्राप्त भगवान् हनुमान का स्वरूप असाधारण है। विद्युत् का सम्पूर्ण स्वरूप केन्द्रित है—

विद्युत्सम्पातदुष्प्रेक्षं विद्युत्सम्पातपिङ्गलम्।
विद्युत्सम्पातनिनदं विद्युत्सम्पातचञ्चलम्॥
(महा०व०अ० 466/76)

भीम की प्रार्थना पर हनुमान वैसे के वैसे हो गए फिर स्नेहयुक्त वाणी में उसको राजधर्म व राजनीति की श्रेष्ठ बातों का विस्तार से उपदेश दिया तथा भीम की जिज्ञासा पर श्रीराम के चरित्र का वर्णन तो किया ही चारों युगों के धर्मों तथा चारों वर्णों के धर्म का वर्णन-विवेचन भी किया। उन्होंने प्रत्येक युग के आचार, धर्म, अर्थ एवं काम के तत्त्व, शुभाशुभ कर्म, उन कर्मों की शक्ति तथा उत्पत्ति और विनाशादि भाव का अलग-अलग वर्णन किया है। उन्होंने विलक्षण बात यह बताई कि कृतयुग में भगवान नारायण का वर्ण शुक्ल था। धर्म चारों चरणों से सम्पन्न था। ऋक्, साम, यजुर्वेद के मन्त्र-वर्णों का पृथक्-पथक् विभाग नहीं था। लोग एकमात्र वेद को मानने वाले थे। त्रेतायुग में ही यज्ञ-कर्म का प्रारम्भ हुआ। उसमें भगवान् का वर्ण लाल हो जाता है तथा धर्म के एक चरण का ह्रास होकर तीन चरण ही रह जाते हैं। द्वापर में धर्म के दो ही चरण रह जाते हैं तथा विष्णु का स्वरूप पीले वर्ण का हो जाता है और वेद ऋक्, साम, यजु और अथर्व चार भागों में बँट जाता है और कलियुग में विष्णु के श्रीविग्रह का रंग काला हो जाता है। धर्म का केवल एक ही चरण रह जाता है। वैदिक सदाचार, धर्म तथा यज्ञ-कर्म नष्ट हो जाते हैं। इस सारे वर्णन व विवेचन में हनुमानजी के अगाध पाण्डित्य का परिचय प्राप्त होता है। पर उस मिलन में सबसे ऊपर जो बात उभर कर सामने आई वह यह कि हनुमानजी में वात्सल्य भाव प्रचुर मात्रा में विद्यमान है। उन्होंने भीम के माध्यम से सभी पाण्डु पुत्रों पर अपना यह भाव (वात्सल्य) बरसा दिया। उन्होंने वर रूप आश्वासन दे दिया—भावी कौरवों के साथ युद्ध में जब तुम शत्रुओं की सेना में घुस कर सिंहनाद करोगे उस समय मैं अपनी गर्जना से तुम्हारे उस सिंहनाद को और बढ़ा दूँगा। इसके सिवा अर्जुन के रथ की ध्वजा पर बैठ कर मैं ऐसी भीषण गर्जना करूँगा जो शत्रुओं के प्राणों को हरने वाली होगी जिससे तुमलोग सुगमता से उन्हें मार सकोगे। (श्रीमहाभारत वन पर्व, 151वाँ अध्याय)

हमारे कलियुग में श्री हनुमान की नगर-नगर, गाँव-गाँव, जन-जन में जितनी पैठ, प्रतिष्ठा है उतनी किसी दूसरे देवता की नहीं। क्या हिन्दू क्या मुसलमान, जैन, सिख सभी सम्प्रदाय के लोग इन्हें पूजते हैं। इस सन्दर्भ में भारतीय शास्त्रों के सुप्रसिद्ध विद्वान् Alain Danielon का कथन विचारणीय है—The monkey-headed demigod Hanuman, the selfless helper and devotee of Ram, is one of the main deities in most villages of northern India. Hanuman's image is also found in almost every one of the ancient forts of South India. (Hindu polytheism, p. 173. Bollingen Series LXXIII Panrheon Books 1964, New York)

मैंने राजस्थान में स्वयं देखा है कि वहाँ पर किसी कुएँ आदि की खुदाई शुरू होती थी तो जब तक उस जगह पर हनुमानजी की मूर्ति की स्थापना व पूजा नहीं हो जाती थी तब तक एक भी राज व मजूर खुदाई के काम में हाथ नहीं लगाता था। हालाँकि वे सब मुसलमान होते थे। एक और बात का मैं साक्षी हूँ, एकबार मैं सालासार हनुमान मन्दिर (बहुत मान्यता प्राप्त), राजस्थान दर्शनार्थ गया था तब एक 6 फुट लम्बे व हट्टे-कट्टे कद-काठी के नौजवान को झाड़ू से आँगन बुहारते देखा तो देखकर बहुत आश्चर्य हुआ सोचा यह व्यक्ति तो मिलिटरी में होना चाहिए यहाँ यह साधारण काम कैसे कर रहा है। कौतूहल इतना बढ़ा कि पूछे बिना रहा नहीं गया। पूछा तो उसने कहा—सेठ जी! आप ठीक कह रहे हैं। मैं मिलिटरी में ही था पर एक रात को मैं पहाड़ से उतर रहा था, बहुत सँकरी पगडंडी थी। एकाएक मेरा एक पैर गड्ढे में, मैंने बाबा (हनुमानजी) को गुहार लगाई, बाबा! मुझे बचा लो और दूसरे ही क्षण मेरा पैर ऊपर आ गया। न मालूम मैं गिरते-गिरते कैसे बचा? दूसरे दिन सुबह जब उस जगह पर गया तो देखा जहाँ मेरा पैर फिसला था वहाँ गिर जाता तो हजारों फुट नीचे पड़ता। तब मैंने सोचा, बाबा ने ही बचाया है। अब यह जीवन तो उसी का है। इस्तीफा देकर चला आया। तीन कोस पर मेरा घर है, खेत है। किसी बात की कमी नहीं। रोज इसके दरबार में आकर हाजिर हो जाता हूँ। बन पड़ती है जो सेवा करता हूँ।...

प्राप्ति स्थान
विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी
www.vvpbooks.com

सम्मान-पुरस्कार

ज्ञानपीठ पुरस्कार—अब 11 लाख रुपये का

देश के सर्वोच्च साहित्यिक सम्मान ज्ञानपीठ पुरस्कार के रूप में दी जाने वाली राशि को सात लाख रुपये से बढ़ाकर 11 लाख रुपये कर दिया गया है। 46वाँ ज्ञानपीठ पुरस्कार कन्नड़ लेखक चंद्रशेखर कंबर को बेलगाम में प्रदान करते समय ज्ञानपीठ के प्रबन्ध ट्रस्टी आलोक जैन ने घोषणा की कि अगले वर्ष से इस पुरस्कार की राशि 11 लाख रुपये होगी और टाई होने की स्थिति में पहले की तरह पुरस्कार की राशि को आधा-आधा नहीं किया जायेगा, बल्कि दोनों पुरस्कृत लेखकों को पूरी-पूरी राशि प्रदान की जायेगी।

यश भारती पुरस्कार राशि 11 लाख हुई

विगत दिनों उत्तर प्रदेश सरकार ने यश भारती सम्मान की पुरस्कार राशि पाँच लाख रुपये से बढ़ाकर 11 लाख रुपये करने के प्रस्ताव पर अपनी स्वीकृति दे दी। यह पुरस्कार राशि शास्त्रीय संगीत, लोक संगीत, साहित्य, विज्ञान, खेल, अभिनय, निर्देशन, आलेखन, चित्रकला, मूर्तिकला, आधुनिक एवं परम्परागत नाट्य विधाएँ, ललित कलाओं के विकास तथा विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट योगदान देने वाली शख्सियतों को दी जाएगी।

हिलेरी मेंटेल को बुकर पुरस्कार

ब्रिटेन की उपन्यासकार हिलेरी मेंटेल दूसरी बार प्रतिष्ठित बुकर पुरस्कार जीतने वाली पहली महिला बन गई हैं। ऐसा करके उन्होंने इतिहास रच दिया है। मेंटेल को फिक्शन वर्ग में उनकी रचना 'ब्रिंग अप द बॉडीज' के लिए यह पुरस्कार दिया गया है। इससे पहले उन्हें 2009 में उपन्यास 'वोल्फ हाल' के लिए यह पुरस्कार मिला था।

राजीव गाँधी विद्या एवार्ड

वाराणसी के आर्य महिला पी०जी० कॉलेज की अर्थशास्त्र विभागाध्यक्ष डॉ० शशिबाला श्रीवास्तव को भारत सरकार द्वारा राजीव गाँधी विद्या गोल्ड एवार्ड विगत दिनों दिल्ली में दिया गया। शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए उन्हें यह एवार्ड दिया गया है।

संगीत नाटक अकादमी फेलोशिप

सरोद वादक अमजद अली खान और संतूर वादक शिवकुमार शर्मा संगीत नाटक अकादमी फेलोशिप पाने वाले कलाकारों में शामिल हैं। राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने कुल 47 प्रतिष्ठित कलाकारों को सम्मानित किया। वर्ष 2011 के अकादमी फेलोशिप अवॉर्ड के लिए संगीत, नृत्य और थियेटर से जुड़े 11 लोगों को नामित किया गया था। इनमें बाँसुरी वादक हरिप्रसाद चौरसिया व्यस्तता के कारण कार्यक्रम में शामिल नहीं हो सके।

इसके अतिरिक्त फिल्म व टेलीविजन अभिनेता विक्रम गोखले सहित 36 लोगों को संगीत नाटक अकादमी अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। अकादमी फेलोशिप पाने वाले कलाकारों को तीन लाख रुपये, अंगवस्त्र और ताम्रपत्र दिया गया, जबकि संगीत नाटक अकादमी अवॉर्ड से सम्मानित लोगों को एक लाख रुपये, अंगवस्त्र और ताम्रपत्र दिया गया। दिल्ली में त्रिवेणी कला संगम के संस्थापक एस०के० श्रीधरानी और निर्देशक व नाटक लेखक अलखनंदन को मरणोपरान्त अकादमी अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। इस साल अवॉर्ड के लिए नामित होने के बाद दोनों की मृत्यु हो गई थी। सम्मान पाने वालों में भरतनाट्यम नृत्यांगना नर्तकी नटराजन (48) सबसे कम उम्र की कलाकार थीं।

जापानी व ब्रिटिश वैज्ञानिकों को चिकित्सा का नोबेल

शरीर की सामान्य कोशिकाओं से स्टेम सेल बनाने में कामयाबी हासिल करनेवाले जापान और ब्रिटेन के वैज्ञानिकों को संयुक्त रूप से वर्ष 2012 का चिकित्सा का नोबेल पुरस्कार दिया गया है।

ब्रिटिश वैज्ञानिक जॉन गुरडन और जापान के शिन्या यामानाका पुरस्कार के रूप में मिलने वाली 12 लाख डॉलर (करीब 6.25 करोड़ रुपये) की राशि बराबर से साझा करेंगे।

सर्ज-डेविड को भौतिकी का नोबेल

सुपर कम्प्यूटर निर्माण की राह बताने वाले फ्रांस के वैज्ञानिक सर्ज आरोश और अमेरिकी वैज्ञानिक डेविड वाइनलैंड को संयुक्त रूप से वर्ष 2012 का भौतिकी का नोबेल पुरस्कार दिया गया है। क्वांटम पार्टिकल को बगैर नष्ट किए मापने की विधि खोजने के लिए दोनों को यह पुरस्कार प्रदान किया गया है। क्वांटम फिजिक्स में इन वैज्ञानिकों के इस शोध के कारण अति शक्तिशाली सुपर कम्प्यूटर बनाने की राह खुलने की सम्भावना है।

रॉबर्ट और ब्रायन को रसायन का नोबेल

वर्ष 2012 के रसायन विज्ञान का नोबेल पुरस्कार दो अमेरिकी वैज्ञानिकों ने जीता है। रॉबर्ट लेफ्कोविट्ज और ब्रायन कोबिल्का नाम के इन वैज्ञानिकों ने ऐसे प्रोटीनों की खोज की है जो कोशकाओं को शरीर के बाहर से मिलने वाले संकेतों के अनुसार कार्य करने के लिए प्रेरित करते हैं। इस खोज से डायबिटीज, कैंसर और अवसाद जैसी बीमारियों की अधिक कारगर दवा ढूँढ़ने में मदद मिलेगी।

अर्थशास्त्र का नोबेल दो अमेरिकियों को

अमेरिकी अर्थशास्त्री लॉयड शैप्ले और एल्विन रॉथ को 2012 के लिए अर्थशास्त्र का नोबेल पुरस्कार मिला है।

अलग-अलग आर्थिक कारकों के मिलान की विधि पर शोध करने के लिए उन्हें यह प्रतिष्ठित सम्मान दिया जाएगा। जिसके अन्तर्गत उन्हें मेडल और पुरस्कार राशि के रूप में12 लाख डॉलर (करीब छह करोड़ 33 लाख रुपये) दिए जाएँगे।

चीन के मो यान को साहित्य का नोबेल

चीन के लेखक मो यान को 2012 के लिए साहित्य का नोबेल पुरस्कार मिला है। लोक कथाओं, इतिहास, व समकालीन जीवन के साथ काल्पनिक, वास्तविक और सामाजिक दृष्टिकोण को मिलाने की अनोखी शैली के लिए नोबेल पुरस्कार हेतु उनके नाम की घोषणा की गई। जिसके अन्तर्गत उन्हें मेडल और 12 लाख डॉलर (करीब छह करोड़ 33 लाख रुपये) दिए जाएँगे।

शेनडोंग प्रान्त में किसान परिवार में जन्मे मो का साहित्य मुख्य रूप से चीन से जुड़ा हुआ है।

छोटीखाटू में साहित्यकारों का सम्मान

सुप्रसिद्ध साहित्यिक संस्था श्री छोटीखाटू हिन्दी पुस्तकालय की ओर से प्रसिद्ध साहित्यकार एवं वरिष्ठ राजनेता श्री हृदयनारायण दीक्षित (लखनऊ) को 23वें पण्डित दीनदयाल उपाध्याय साहित्य सम्मान से एवं राजस्थानी के भीष्म पितामह डॉ० उदयवीर शर्मा को महाकवि कन्हैयालाल सेठिया मायड़ भाषा सम्मान से मानपत्र, शॉल एवं इक्कीस-इक्कीस हजार रुपये नकद राशि देकर सम्मानित किया गया।

श्रीलाल शुक्ल स्मृति सम्मान प्रदानीकरण

विगत दिनों लखनऊ में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने शेखर जोशी को सम्मानित करते हुए कहा कि देश की भाषा और संस्कृति को बढ़ाना हम सबका दायित्व है। यह काम नई प्रौद्योगिकी को साथ लेकर ही किया जा सकता है। प्रदेश के लोक निर्माण व सहकारिता मंत्री शिवपाल सिंह यादव ने वरिष्ठ कथाकार शेखर जोशी को श्रीलाल शुक्ल स्मृति इफ्को साहित्य सम्मान अर्पित किया। संगीत नाटक अकादमी के मंच पर कथाकार को सम्मानित करते हुए मंत्री ने सम्मान की राशि साढ़े पाँच लाख रुपये से बढ़ाकर 11 लाख रुपये करने की घोषणा की। साथ ही इंदिरानगर में पी०डब्ल्यू०डी० की सड़क का नाम दिवंगत साहित्यकार श्रीलाल शुक्ल के नाम पर करने की घोषणा की।

वरिष्ठ साहित्यकार राजेन्द्र यादव ने शेखर जोशी को हिन्दी के उन पाँच साहित्यकारों चंद्रधर शर्मा गुलेरी, भुवनेश्वर, ज्ञानरंजन व शिवमूर्ति के बाद शामिल किया, जिन्होंने कम, पर महत्त्वपूर्ण रचनाएँ की।

हिन्दी हेतु पाँच एन०आर०आइ० सम्मानित

ब्रिटेन में हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए पाँच प्रवासी भारतीयों को हिन्दी दिवस के अवसर पर इंटरनेशनल हिन्दी सोसाइटी द्वारा आयोजित समारोह में सम्मानित किया गया। समारोह के

मुख्य अतिथि और नून प्रोडक्ट्स के अध्यक्ष लॉर्ड गुलाम नून ने विगत दिनों इण्डियन जिमखाना में माया न्यूज पेपर के प्रबन्ध सम्पादक दीपक डोगरा के अलावा चार अन्य लोगों को अवार्ड प्रदान किया। इसके अतिरिक्त एशियन वॉयस के सम्पादक सी०बी० पटेल, जी टीवी के ध्रुव गाडवी, परदेश के सम्पादक जसकरण सिंह और इंटरनेशनल हिन्दी सोसाइटी के राजेन्द्र जोशी को भी सम्मानित किया गया।

लमही सम्मान समारोह

'आज तमाम तकनीकी और आधुनिक सुविधाओं के बावजूद न गाँव बदले हैं, न उनका यथार्थ। इस यथार्थ की सच्ची प्रतिच्छवियाँ प्रेमचंद के बाद शिवमूर्ति जैसे कथाकार और उपन्यासकार में दीख पड़ती हैं।' यह बातें पिछले दिनों लखनऊ में कवि-आलोचक एवं संस्कृतिविद अशोक वाजपेयी ने 'लमही' त्रैमासिक की ओर से आयोजित लमही सम्मान समारोह में शिवमूर्ति को सम्मानित करते हुए कही। इस अवसर पर शिवमूर्ति को लमही सम्मान प्रतीक एवं सम्मान-स्वरूप पन्द्रह हजार रुपये की राशि प्रदान की गई। मानपत्र का वाचन कथाकार किरण सिंह ने किया तथा सम्मान पत्र चित्रा मुद्गल ने शिवमूर्ति को भेंट किया।

समारोह की अध्यक्ष चित्रा मुद्गल ने लमही के शिवमूर्ति विशेषांक का लोकार्पण किया। शिवमूर्ति के अवदान पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि आज किसान निर्विकल्प हो गए हैं, उनके उत्थान के सारे रास्ते बन्द हो गए हैं। प्रेमचंद ने किसान को जहाँ पर छोड़ा था, उसे शिवमूर्ति ने नए सिरे से उठाया है।

इस अवसर पर शिवमूर्ति ने कहा कि साहित्य हमें आत्मनिरीक्षण का अवसर देता है। यह हमारी जिन्दगी का रोजनामचा है।

साहित्य परिमल सम्मान एवं कवि प्रस्तुति

विगत दिनों दिल्ली में गैमट फाउंडेशन के तत्त्वावधान में परिमल साहित्य सम्मान और कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। 51000/- की सम्मान राशि वाला प्रथम परिमल साहित्य सम्मान सुविख्यात कवि एवं गजलकार लक्ष्मीशंकर वाजपेयी को प्रदान किया गया। सम्मान के प्रतीक शाल, श्रीफल और सम्मान पत्र स्वीकार करते हुए उन्होंने सम्मान राशि संस्था को दान कर दी। समारोह के मुख्य अतिथि डॉ० योगानन्द शास्त्री एवं उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष उदय प्रताप सिंह थे।

'अतुल माहेश्वरी स्वर्ण पदक'

अमर उजाला के नवोन्मेषक स्वर्गीय अतुल माहेश्वरी की याद में दिया जाने वाला 'श्री अतुल माहेश्वरी स्वर्ण पदक' सत्र 2012 के लिए पत्रकारिता स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम की टॉपर अंकिता रस्तोगी को दिया जाएगा। चौधरी चरण सिंह यूनिवर्सिटी के दीक्षान्त समारोह में अंकिता को इस पदक से सम्मानित किया जाएगा।

आजाद पुरस्कार

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के पुराछात्र और चकिया के मूल निवासी डॉ० बटेश्वर सिंह को शिक्षा क्षेत्र में विशिष्ट कार्यों के लिए मौलाना अबुल कलाम आजाद पुरस्कार प्रदान किया गया है। डॉ० बटेश्वर को यह पुरस्कार 11 नवम्बर को मौलाना आजाद की जयन्ती के उपलक्ष्य में नयी दिल्ली में आयोजित समारोह में दिया गया। इंडिया हैबीटैट सेन्टर में हुए कार्यक्रम में डॉ० बटेश्वर सिंह को पूर्व राज्यपाल डॉ० भीष्म नारायण सिंह और पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त जीवीजी कृष्णमूर्ति ने सम्मानित किया।

साहित्य समालोचक जापान में पुरस्कृत

भारतीय साहित्य समालोचक गायत्री चक्रवर्ती स्पिवाक को प्रतिष्ठित क्योतो पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। क्योतो पुरस्कार एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान है जिसे विज्ञान, संस्कृति और मानवता के क्षेत्र में योगदान देने वालों को दिया जाता है।

सूर्यबाला पुरस्कृत

हिन्दी दिवस पर सुप्रतिष्ठित कथाकार एवं व्यंग्यकार सूर्यबाला को महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादेमी के राज्यस्तरीय छत्रपति शिवाजी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर, शाल, श्रीफल, स्मृतिचिह्न तथा पुरस्कार स्वरूप इक्यावन हजार रुपए की राशि उन्हें महाराष्ट्र के सांस्कृतिक कार्य मंत्री श्री संजय देवतले तथा राज्य मंत्री श्रीमती फौजिया खान के हाथों प्रदान किया गया।

मीरा स्मृति पुरस्कार बद्रीनारायण को

वर्ष 2012 का मीरा स्मृति पुरस्कार युवा कवि बद्रीनारायण को उनके कविता संकलन 'खुदाई में हिंसा' के लिए प्रदान किया जाएगा। पुरस्कार के रूप में उन्हें प्रशस्ति-पत्र, शॉल, श्रीफल और 25 हजार रुपए की राशि दी जाएगी।

इब्राहिम अल्काजी को पुरस्कार

भारतीय रंगमंच के लब्धप्रतिष्ठ व्यक्तित्व इब्राहिम अल्काजी को भारत में रंगमंच की स्थापना तथा उसके विकास में योगदान एवं फोटोग्राफी की विरासत के संरक्षण के लिए पिछले दिनों फ्रांस के सर्वोच्च सांस्कृतिक पुरस्कार से सम्मानित किया गया। प्रख्यात रंगमंचकर्मी अल्काजी को राजधानी में फ्रांस सरकार की ओर से 'नाइट ऑफ द ऑर्डर ऑफ आर्ट्स एण्ड लेटर्स' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। फ्रांस सरकार ने ललित कला और संस्कृति के संरक्षण में उनकी ओर से किए गए कार्यों के लिए उन्हें 'द यूनिवर्सल मैन' की उपाधि भी दी।

राजस्थान साहित्य अकादेमी के पुरस्कार

एक प्रेस नोट के अनुसार राजस्थान साहित्य अकादेमी के विभिन्न पुरस्कारों की राशि में वृद्धि की गई है। अध्यक्ष वेद व्यास के अनुसार अकादेमी की इस वर्ष की राज्य सरकार द्वारा स्वीकृत 'कार्य-योजना' के अनुसार अकादेमी का सर्वोच्च 'मीरा' पुरस्कार इस वर्ष 75000/- का होगा। 'सुधींद्र' (काव्य), 'रांगेय राघव' (कथा-उपन्यास), 'देवीलाल सामर' (नाटक-एकांकी), 'देवराज उपाध्याय' (निबन्ध-आलोचना), 'कन्हैयालाल सहल' (विविध विधाएँ) ये सभी पुरस्कार 31-31 हजार रुपए के होंगे। 'सुमनेश जोशी' (प्रथम प्रकाशित कृति) और 'शंभूदयाल सक्सेना' (बाल साहित्य) पुरस्कार 15-15 हजार रुपए के होंगे। अकादेमी की 'नवोदित प्रोत्साहन पुरस्कार' योजना के अंतर्गत 'महाविद्यालय' स्तरीय—'डॉ० सुधा गुप्ता पुरस्कार' और 'डॉ० चंद्रदेव शर्मा पुरस्कार' (चार) तथा विद्यालय स्तरीय 'परदेशी पुरस्कार' (चार) की राशि भी 5-5 हजार रुपए कर दी गई है।

ब्रजेंद्र त्रिपाठी को संस्कृति पुरस्कार

भारतीय नार्वेजीयन सूचना एवं सांस्कृतिक फोरम की ओर से आयोजित वार्षिक 'भारत-नार्वे लेखक सेमिनार' में भारतीय लेखक ब्रजेंद्र कुमार त्रिपाठी व नार्वेजीयन लेखक कार्सतेन अलनेस को संस्कृति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर नार्वेजीयन लेखक यूनियन के अध्यक्ष सिगमुंद ल्योवोसेन, लेखक सेंट की फ्रोइदिस अलवेर, कार्सतेन अलनेस, ब्रजेंद्र कुमार त्रिपाठी और सुरेशचंद्र शुक्ल आदि ने वक्तव्य प्रस्तुत किए।

स्वाति तिवारी को हिन्दी सेवी सम्मान

उदयपुर। हिन्दी की विख्यात कथाकार स्वाति तिवारी को 25 नवम्बर 2012 को साहित्यिक पत्रिका 'संबोधन' द्वारा 8वाँ हिन्दी सेवी सम्मान प्रदान किया गया।

राजस्थान साहित्य अकादमी के सभागार में आयोजित समारोह में मधुसूदन पण्डया ने शाल एवं श्रीफल साहित्य अकादमी के अध्यक्ष वेद व्यास ने प्रशस्ति पत्र व 'संबोधन' के सम्पादक कमर मेवाड़ी ने 11,000/- रुपये का चेक प्रदान कर अभिनन्दन किया।

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार

कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गाँधी ने विगत 31 अक्टूबर को इंदिरा गाँधी की पुण्य तिथि पर दिल्ली में आयोजित एक समारोह में हिन्दी के सुप्रसिद्ध गीतकार और फिल्म निर्देशक गुलजार को 27वें इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार से अलंकृत किया। पुरस्कारस्वरूप उन्हें पाँच लाख रुपए की नकद राशि और एक प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया।

पुस्तक परिचय

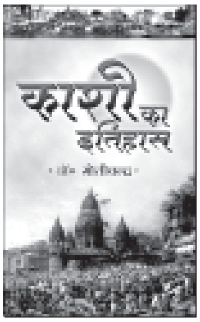

काशी का इतिहास

डॉ० मोतीचन्द्र

चतुर्थ संस्करण : 2010 ई०

पृष्ठ : 404 + 48 पृ० चित्र

सजि. : रु० 750.00 ISBN : 978-81-7124-745-5

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

काशी उस सभ्यता की सदा से परिपोषक रही है, जिसे हम भारतीय सभ्यता कहते हैं और जिसके बनाने में अनेक मत-मतान्तरों और विचार-धाराओं का सहयोग रहा है। यही नहीं धर्म, शिक्षा और व्यापार से वाराणसी का घना सम्बन्ध होने के कारण इस नगरी का इतिहास केवल राजनीतिक इतिहास न होकर एक ऐसी संस्कृति का इतिहास है जिसमें भारतीयता का पूरा दर्शन होता है। लेखक ने इतिहास और संस्कृति सम्बन्धी बिखरी हुई सामग्री को जोड़कर इस इतिहास का निखरा स्वरूप खड़ा किया है। रोचक सामग्री का भी प्रचुर उपयोग करके नगर के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला है। लेखक की दृष्टि में इतिहास केवल शुष्क घटनाओं का निर्जीव ढाँचा नहीं है, उसमें हम समाज की प्रक्रियाओं का भी पूर्णरूप से दर्शन कर सकते हैं। अपने विषय की एकमात्र कृति तो यह है ही।

'काशी का इतिहास' नामक यह ग्रन्थ हिन्दी साहित्य में एक नई चासनी सामने रखता है। इसके लेखक श्री मोतीचन्द्र जो यशस्वी विद्वान् है। वे काशी निवासी श्री भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी के वंशज हैं। ऐसा सटीक इतिहास लिखकर उन्होंने अपने आपको अपनी नगरी के ऋण से उऋण कर लिया है।

श्री मोतीचन्द्रजी ने प्रस्तुत इतिहास में भी अपने 'सार्थवाह' और 'भारतीय वेशभूषा' की भाँति तिल-तिल सामग्री जोड़कर इतिहास का सुमेरु खड़ा किया है। यह एक नमूना है कि इस बड़े देश के महानगरों का इतिहास किस प्रकार रचा जा सकता है। यह काम अभी बहुत आगे बढ़ाना है। एथेन्स रोम आदि प्राचीन नगरों के कितने ही इतिहास बने हैं, उनके धर्म, कला, जीवन, अर्थ समृद्धि, संस्कृति आदि के विषय में विलक्षण अध्यायों का जैसे अन्त ही नहीं है। कुछ वैसा ही अध्यवसाय भारत की महापुरियों के लिए भी करना होगा। उसी का उत्तम उदाहरण इस रूप में पाकर हमें प्रसन्नता होती है।

—डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल

विगत वर्षों में क्रमशः प्रथम संस्करण दुर्लभ होता गया। राय कृष्णदासजी, डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल और विद्वान् लेखक आज हमारे बीच नहीं हैं पर 'काशी का इतिहास' के पाठकों की संख्या निरन्तर बढ़ती रही है और इसी के साथ बाजार में पुस्तक की माँग भी बढ़ी है।

प्रथम संस्करण में धार्मिक पक्षों और स्थलों की जो जानकारियाँ उस समय उपलब्ध नहीं थीं, इस नवीन संस्करण में उनका समावेश किया गया है।

वर्तमान संस्करण में काशी के अनेक दुर्लभ चित्र सम्मिलित किए गए हैं। काशी को रेखाचित्रों में सजीव करने वाले आधुनिक काशी के निर्माता जेम्स प्रिंसेप की पुस्तक **बनारस इलेस्ट्रेटेड** जो 1831 ई० में प्रकाशित हुई थी। उसके अनेक चित्र इस पुस्तक में सम्मिलित किये गये हैं। यह पुस्तक विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी ने 1986 ई० में प्रथम बार पुनः मुद्रित की। इन चित्रों से विगत तीन-चार शताब्दी में काशी के बदलते भौगोलिक स्वरूप और इतिहास की जानकारी होती है।

उर्दू के प्रतिनिधि शायर और उनकी शायरी

प्रो० वशिष्ठ अनूप

प्रथम संस्करण : 2013 ई०

पृष्ठ : 200

सजि. : रु० 350.00 ISBN : 978-81-7124-953-4

अजि. : रु० 120.00 ISBN : 978-81-7124-954-1

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

भाषा और साहित्य के क्षेत्र में 'उर्दू' शब्द भले ही लगभग दो सौ साल पहले प्रयुक्त हुआ हो, उर्दू शायरी काफ़ी पहले से रेख़्ता, दकनी और हिन्दी के नाम से रची जा रही थी। उर्दू शायरी का इतिहास अत्यन्त गौरवशाली और रोचक रहा है। उर्दू ज़बान और उर्दू शायरी को निखारने-सँवारने में हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों का हाथ रहा है। उर्दू कविता ने हमारे मस्तिष्क, चरित्र और हमारे विचारों को रचने और सँवारने तथा संकीर्णताओं को मिटाने, जीवन के प्रति आकर्षण पैदा करने और मनुष्य को संवेदनशील बनाने में रचनात्मक भूमिका निभाई है। उर्दू कविता की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसने प्रेम को सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। यह प्रवृत्ति हिन्दी के सूफ़ी सन्तों और भक्त कवियों में भी भरपूर दिखाई पड़ती है। वर्णन की रवानी, अन्दाज़े-बयाँ और विषय-वस्तु के अनुकूल सटीक शब्दों के चयन से उर्दू कविता में अद्‌भुत जादुई असर पैदा होता है। उर्दू शायरी में एक ख़ास तरह की कशिश होती है जो सुनने या पढ़ने वालों को सहज ही आकर्षित कर लेती है। इसके एक-एक शेर में एक-एक कहानी भरी होती है। संक्षिप्तता, सारगर्भिता और तत्काल प्रभावोत्पादकता इसकी निजी ख़ासियत है।

प्रो० वशिष्ठ अनूप हिन्दी ग़ज़ल व गीत के एक चर्चित रचनाकार और स्थापित समालोचक तो हैं ही, वे उर्दू शायरी, उसके शास्त्र और उसके इतिहास के भी मर्मज्ञ व अधिकारी विद्वान हैं। आपने उर्दू शायरी के लम्बे और समृद्ध इतिहास से अट्ठारह महान शायरों—वली दकनी, मीर, नज़ीर, ज़फ़र, ग़ालिब, जौक़, दाग़, इक़बाल, जिगर, फ़िराक़, फ़ैज़, मख़दूम और साहिर आदि की प्रतिनिधि शायरी और उनका साहित्यिक मूल्यांकन प्रस्तुत कर एक श्रेष्ठ, आवश्यक और सराहनीय कार्य किया है। उर्दू कविता के हिन्दी पाठकों के लिए यह पुस्तक एक बेशकीमती सौगात है।

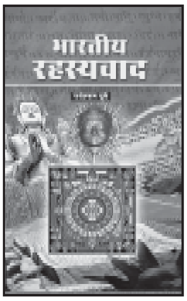

भारतीय रहस्यवाद

प्रो० राधेश्याम दूबे

प्रथम संस्करण : 2013 ई०

पृष्ठ : 172

सजि. : रु० 200.00 ISBN : 978-81-7124-894-0

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

प्रो. राधेश्याम दूबे मध्यकालीन हिन्दी साहित्य के अध्येता हैं। भक्तिकालीन कवियों की रचनाओं का अध्ययन करते समय लेखक ने भारतीय रहस्यवाद को ध्यान में रखा है। वस्तुतः भारतीय अध्यात्मविद्या अथवा ब्रह्मविद्या ही भारतीय रहस्यवाद है। प्राचीन भारतीय वाङ्मय में रहस्यवाद के अर्थ में अध्यात्मविद्या, ब्रह्मविद्या, उपनिषद्, गुह्यविद्या, गुह्यमार्ग आदि शब्दों के प्रयोग मिलते हैं। योग, भक्ति, कर्म और ज्ञान—ये भारतीय अध्यात्मसाधन के प्रधान उपाय हैं। अतः साधन की दृष्टि से विचार करते हुए लेखक ने भारतीय रहस्यवाद को चार भेदों में विभक्त कर (जैसे—योगपरक रहस्यवाद, भक्तिपरक रहस्यवाद, ज्ञानपरक रहस्यवाद, कर्मपरक रहस्यवाद) उनकी व्याख्या की है। भारतीय रहस्यवाद का विकासात्मक स्वरूप प्रस्तुत करते हुए विद्वान् लेखक ने उसके तात्त्विक स्वरूप की विवेचना की है। इस प्रकार इस ग्रन्थ के अध्ययन द्वारा रहस्यवाद अथवा भारतीय रहस्यवाद के सन्दर्भ में हिन्दी के पाठकों के मन में जो भ्रम की स्थिति बनी रहती है, वह दूर हो जाती है।

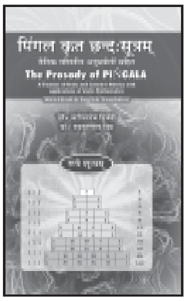

पिंगल कृत छन्दःसूत्रम्
(वैदिक गणितीय अनुप्रयोगों सहित)

Prosody of PINGALA

(A Treatise of Vedic and Sanskrit Metrics with applications of Vedic Mathematics) With Hindi & English Translation

डॉ० कपिलदेव द्विवेदी व
डॉ० श्यामलाल सिंह

द्वितीय संस्करण : 2013 ई०		पृष्ठ : 344

सजि. : रु० 500.00 ISBN : 978-81-7124-876-6

अजि. : रु० 300.00 ISBN : 978-81-7124-877-3

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

वैदिक छन्द-शास्त्र की परम्परा वेदों के प्रकट काल से आरम्भ होती है । आचार्य पिंगल से पूर्ववर्ती छन्द-शास्त्र के आचार्यों के दो दर्जन से अधिक नाम तो मिलते हैं किन्तु आचार्य पिंगल का ''छन्दःसूत्रम्'' ही छन्द-शास्त्र की प्राचीनतम उपलब्ध पुस्तक है । जिसका लम्बे समय से पाठ्य-पुस्तक के रूप में प्रयोग हो रहा है।

आधुनिकतम खोजों के अनुसार इनके माता-पिता वर्तमान पेशावर जिले में शालातुर ग्राम के निवासी थे। आचार्य पिंगल के नाम से प्रसिद्ध पिंगल नाग का समय 2850 बी0सी0 या इससे पूर्व बताया जाता है।

दशवीं शताब्दी के गणित एवं संस्कृत के आचार्य हलायुध भट्ट की 'मृतसंजीवनी' छन्दःसूत्रम् की सबसे लोकप्रिय एवं प्रामाणिक टीका है जिसका प्रयोग भारतीय उपमहाद्वीप में लगभग 1050 वर्षों से हो रहा है । छन्दःसूत्रम् की कतिपय अन्य टीकाएँ भी हैं, किन्तु मृतसंजीवनी अथवा किसी अन्य टीका का हिन्दी अथवा अंग्रेजी रूपान्तरण नहीं हुआ है । वर्तमान पुस्तक में मृतसंजीवनी को आधार बनाते हुए सभी सूत्रों का शब्दार्थ देने के साथ हिन्दी व अंग्रेजी में अनुवाद किया गया है तथा आवश्यकतानुसार उनकी विवेचना की गई है ।

आचार्य पिंगल ने वैदिक गणित का अभिनव प्रयोग अपने छन्दःसूत्रम् में किया है । इसके आठवें अध्याय में प्रत्ययों के अन्तर्गत छः प्रकार के गणितीय प्रयोग दिए गए हैं । दो प्रकार की वैदिक द्वि-आधारी संख्याएँ, संचय श्रेढी, वर्णिक मेरु, मात्रिक मेरु एवं अन्य सम्बन्धित वैदिक गणित की विधाएँ विशेष आकर्षक इसलिए भी हैं कि गणितशास्त्र के आधुनिक इतिहास पर इनका दूरगामी प्रभाव पड़ेगा तथा गणित एवं कम्प्यूटर विज्ञान के अध्येताओं के लिए नूतन सामग्री भी इसमें है ।

वैदिक एवं लौकिक छन्द-शास्त्र तथा गणित के प्रेमियों, छात्रों, शिक्षकों एवं संगीतकारों के लिए उपयोगी वर्तमान पुस्तक का लाभ सभी वर्ग एवं आयु के अनुशीलनप्रिय व्यक्तियों को मिलेगा । विचारों के इतिहास में छन्दःसूत्रम् एक अद्भुत रचना है जिसका प्रभाव अन्य सांस्कृतिक प्रक्षेत्रों पर पड़ना अवश्यम्भावी है । अस्तु, प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति के अध्येताओं एवं शोधार्थियों के लिए भी यह पुस्तक उपयोगी सिद्ध होगी ।

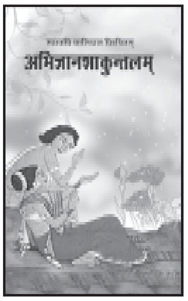

महाकवि कालीदास विरचितम्

अभिज्ञानशाकुन्तलम्

व्याख्याकार

डॉ० शिवशंकर गुप्त

षष्ठ संस्करण : 2013 ई०

पृष्ठ : 320

अजि. : रु० 90.00 ISBN:978-81-7124-947-3

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

विश्व साहित्य के कवियों में महाकवि कालिदास का स्थान मूर्धन्य है। वे रससिद्ध, कवीश्वर, कविकुल चूड़ामणि, स्वनाम धन्य सरस्वती के वरद पुत्र एवं भारती के अमर कलाकार थे। वे भारतीय संस्कृति के महान उन्नायक, मानव मूल्यों के सम्पोषक तथा सामाजिक हितों के परिपालक थे। वे अद्भुत शब्द शिल्पी एवं रस व्यञ्जना के कुशल पण्डित थे। भारतीय सांस्कृतिक गरिमा ने इतनी ऊँचाई तक उठाया कि इस महाकवि ने अपने सफल कवित्व-शक्ति के बल पर भारत को विश्व के मानचित्र पर लाकर खड़ा कर दिया है।

इनमें अद्भुत कवित्व-शक्ति, रचना कौशल, प्रकृति का प्रकृष्ट प्रेम, काव्यात्मक शब्द शक्ति, रस, व्यञ्जना एवं भौतिक उद्भावना शक्ति थी।

महाकवि ने अपनी अनुपम साहित्यिक रचना कौशल के बल पर भारतीय सांस्कृतिक गरिमा को अक्षुण्ण रक्खा है। इनकी रचनाओं में वर्णित नैतिक आचरण एवं सदाचार के नियम आज भी सम्पूर्ण विश्व के लिए प्रेरणा-स्रोत हैं एवं मानवीय गृहस्थ जीवन में व्यवहृत करने योग्य हैं। उन्होंने वैदिक काल से लेकर अपने युग तक जिन शाश्वत विचारों और भावों को अपने ग्रन्थों में चित्रित किया है वे समाज में सदैव जीवित रहेंगे। उन्होंने जीवन की सभी अनुभूतियों को अपने ग्रन्थों में स्थान दिया है।

यह नाटक संस्कृत साहित्य का ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व साहित्य का समुज्ज्वल रत्न है। प्रस्तुत नाटक 7 अङ्कों का है। इसमें चन्द्रवंशी राजा दुष्यन्त एवं मेनका नामक अप्सरा की पुत्री 'शकुन्तला' दोनों की प्रणय-कथा है।

कालिदास संस्कृत साहित्य के सर्वश्रेष्ठ नाटककार माने जाते हैं, उनके मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय और अभिज्ञानशाकुन्तल—इन 3 नाटकों में से शाकुन्तल में ही उनकी नाटकीय प्रतिभा का सर्वोत्तम निरूपण है—जैसा कि कहा है—'कालिदासस्य सर्वस्वमभिज्ञान शाकुन्तलम्'। कालिदास के नाटकों में निम्न विशेषताएँ परिलक्षित होती हैं—घटना-संयोजन में सौष्ठव, घटनाओं और वर्णनों की सार्थकता, वर्णनों में स्वाभाविकता, रचना-कौशल, वर्णनों में अन्य घटनाओं की संकेतात्मता, चरित्र-चित्रण में वैयक्तिकता, पात्रों के अनुकूल भाषा का प्रयोग, कविता और रस-परिपाक। कालिदास के नाटक अभिनय के लिए पूर्णत: उपयुक्त हैं जबकि संस्कृत के अधिकांश नाटक ऐसे नहीं हैं।

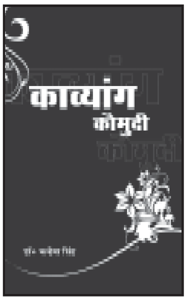

काव्यांग कौमुदी

डॉ० कन्हैया सिंह

संस्करण : 2013 ई०

पृष्ठ : 80

अजि. : रु० 25.00 ISBN:978-81-7124-945-9

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

साहित्य के अध्ययन के साथ साहित्यशास्त्र का अध्ययन भी होना चाहिये। साहित्य का सहज अध्ययन लोकरंजन तो कर सकता है, पर उसके सौन्दर्य का सम्यक् बोध उसके शास्त्रीय पक्ष को जान कर ही प्राप्त किया जा सकता है। कविता के अध्ययन में तो यह एक आवश्यक बात है। उच्च कक्षाओं के छात्रों को साहित्य के साथ साहित्यशास्त्र का गम्भीर अध्ययन और अनुशीलन कराया जाता है, पर स्नातक स्तर पर भी उसके कुछ बिन्दुओं का अध्ययन अपेक्षित होता है, जो कविता के सौन्दर्यबोध के लिये आवश्यक प्राथमिक ज्ञान प्रदान करता है।

भारतीय साहित्य-चिन्तकों ने साहित्यशास्त्र का सम्यक् निरूपण किया। साहित्य या काव्य की आत्मा 'रस' को माना गया है। 'अलंकार' उसकी शोभा बढ़ाने वाले धर्म हैं और 'छंद' उसकी गति हैं। इसके साथ ही काव्य (कविता) में रस, पद, वाक्य और अर्थ सम्बन्धी कुछ दोषों का विश्लेषण करके आचार्यों ने उनसे बचने का निर्देश किया। अत: इनका एक सामान्य ज्ञान स्नातक स्तर के विद्यार्थी के लिये अनिवार्य है।

अधुना काव्य में स्थापनायें और मान्यतायें बदल रही हैं। रस, अलंकार, छंद सबसे छुट्टी है। दोषों का तो कोई विचार ही नहीं। पर प्राचीन और मध्यकालीन हिन्दी कविता के अध्ययन के लिये इनकी उपयोगिता असंदिग्ध है। इसी उद्देश्य से स्नातक हिन्दी साहित्य के अध्येताओं के लिये यह पुस्तक लिखी गयी है।

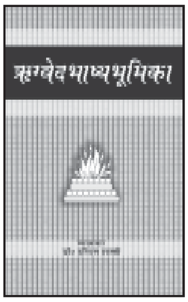

ऋग्वेदभाष्यभूमिका
(सायणाचार्यकृता हिन्दी व्याख्या सहित)

व्याख्याकार
डॉ० हरिदत्तशास्त्री
व्याकरणाचार्य, वेदान्ताचार्य
भूतपूर्व कुलपति, गुरुकुल महाविद्यालय (ज्वालापुर)

संस्करण : 2013 ई०   पृष्ठ : 176
अजि. : रु० 50.00 ISBN : 978-81-7124-929-9
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

सायणाचार्य वेद, राजनीति, धर्मशास्त्र, साहित्यशास्त्र, अलङ्कारशास्त्र आदि के निष्णात विद्वान् थे। वेद भाष्यकारों में माधवभट्ट, स्कन्दस्वामी, उद्‌गीथ वेङ्कटमाधव, नारायण आदि का भी नाम प्रसिद्ध है, भव स्वामी, गुहदेव, उव्वट महीधर, माधव, गुण-विष्णु भी विख्यात हैं। तैत्तिरीय संहिता का भाष्य भट्ट भास्कर ने बनाया है। वेंकटमाधव की लेखनी केवल ऋग्वेद तक ही सीमित रही है, हलायुध ने शुक्लयजुर्वेद की टीका की है। आचार्य गुणविष्णु ने सामवेद की टीका लिखी है। किन्तु 'अथ' से लेकर 'इति' तक चारों वेदों पर सायण ने ही लिखने का श्रेय लिया है। फिर प्रतिपद स्वर संचार द्वारा अपनी वैयाकरणता की छाप भी पण्डितों पर बिठा दी है।

विषयानुक्रमणिका

मंगलाचरण, पूर्वपक्ष—यजुर्वेद के प्रथम व्याख्यान का अनौचित्य, उत्तरपक्ष—यजुर्वेद के प्रथम व्याख्यान का समर्थन, पूर्वपक्ष—वेद का लक्षण और वेद के मानने के प्रमाण, उत्तरपक्ष—वेद की सत्ता, पूर्वपक्ष—वेदप्रामाण्यविचार (मन्त्रभाग प्रामाण्यचर्चा) उत्तरपक्ष—मन्त्रभाग प्रामाण्यस्थापना, पूर्वपक्ष—जैमिनि मुनि के सूत्रों द्वारा मन्त्रप्रामाण्य विचार, ब्राह्मणभाग प्रामाण्य निरूपणम्, अर्थवादभाग प्रामाण्याप्रामाण्य विचार:, वेदापौरुषेयत्व सिद्धि, वेदस्य मन्त्रब्राह्मणात्मकत्वविचार:, ब्राह्मण-लक्षणविचार:, मन्त्रत्रैविध्य विचार:, वेदाध्ययन की अवश्य कर्तव्यता, वेदाध्ययन का फल अर्थज्ञान है या अक्षरज्ञान मात्र, पूर्वपक्ष—अक्षर-ग्रहण पर्यन्तता सिद्धान्त का समर्थन, वेदार्थज्ञ प्रशंसा ज्ञानफलातिशय विचारश्च, वेद के विषय आदि अनुबन्धचतुष्टय का निरूपण, वेद का प्रयोजन, अधिकारि-निरूपण, सम्बन्ध निरूपण, अपरविद्या स्वरूप वेदांगों का निरूपण, शिक्षा निरूपण, ऊह: खल्वपि, आगम: खल्वपि, लघ्वर्थ चाध्येयं व्याकरणम्, असन्देहार्थ चाध्येय व्याकरणम्, 1 ते असुरा:, 2 दुष्ट: शब्द:, 3 यदधीतम्, 4 यस्तुप्रयुंक्ते, अविद्वांस:, विभक्ति कुर्वन्ति, यो वा इमाम्, चत्वारि, दूसरे मंत्र की व्याख्या, उत त्व:, सक्तुमिव, सारस्वतीम्, दशभ्यां-पुत्रस्य, सुदेवो असि, निरुक्तविवरणम्, श्लोकार्थ, छन्द: प्रयोजन निरूपणम्, ज्यौतिषशास्त्र प्रयोजन, पुराणादि चतुर्दश विद्यानाम वेदार्थज्ञानोपयोगत्वम्, परिशिष्ट।

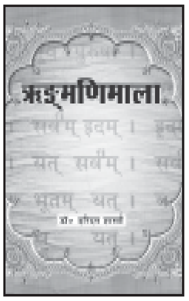

ऋङ्मणिमाला

व्याख्याकार
डॉ० हरिदत्तशास्त्री
व्याकरणाचार्य, वेदान्ताचार्य
भूतपूर्व कुलपति, गुरुकुल महाविद्यालय (ज्वालापुर)
चतुर्थ संस्करण : 2013 ई०
पृष्ठ : 240

अजि. : रु० 80.00 ISBN : 978-81-7124-948-0
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

विभिन्न भारतीय विश्वविद्यालयों के उच्चस्तरीय पाठ्यक्रमों में ऋग्वेद के चौदह सूक्त अध्ययनार्थ निर्धारित किये गये हैं। किन्तु इन सूक्तों की अपनी अलग-अलग विशेषता है। सूक्त का शब्दार्थ शोभन वचन है। यह शोभनता 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' के रूप में वेद में ही मिलती है, क्योंकि यह ईश्वर की तरह देश-काल आदि सीमा से बद्ध नहीं। वेद की सुरक्षा के लिए संहितापाठ, पदपाठ, क्रमपाठ, जटापाठ, घनपाठ आदि वेदपाठियों की परम्परा में प्रचलित किये गये जिनका साधारण दिग्दर्शन 'प्राक् कथन' में कराया गया है। यत्न तो यही किया है कि वेद के प्रति श्रद्धोत्पादक तत्त्व पाठकों के समक्ष रक्खे जायँ। प्रस्तुत चयन अनेक दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है।

पुस्तक की टीकागत विशेषता

प्रत्येक मन्त्रान्तर्गत पद की व्याख्या हिन्दी में दी गई है। मन्त्रों के पदों को छोड़कर केवल हिन्दी की व्याख्या ही पढ़ी जाय तो 'कथा' के पढ़ने जैसा आनन्द मिलेगा तथा मन्त्रार्थ भी सुबोध हो जायेगा। देवता-परिचय पृथक् दिया गया है, जिससे किस देवता की क्या-क्या विशेषताएँ हैं, उसका क्या स्वरूप है, यह सरल रीति से समझ में आ सकता है। छन्द:परिचय भी स्पष्ट रीति से दिया है, जिससे किस मन्त्र में कौन-सा छन्द है, यह अनायास समझ में आ सके। मन्त्रों में स्वर-संचार का क्या ढंग है इसका निरूपण भी आपको भूमिका में ही दृष्टिगोचर होगा। सारांश यह है कि वेद का विषय इतना कठिन अब नहीं रह गया है जितना छात्र समझते हैं, एक बार इसे ध्यान से पढ़ भर जाइये आपको वेदों के स्वाध्याय का आनन्द आने लगेगा,

सूक्तानुक्रमणी : 1. आग्निमारुत (अग्नि) सूक्त, 2. वरुण-सूक्त, 3. सूर्य-सूक्त, 4. अग्नि-सूक्त, 5. मित्र-सूक्त, 6. उषस्-सूक्त, 7. सविता-सूक्त, 8. पर्जन्य-सूक्त, 9. यम-सूक्त (पितृसूक्त, मृत्युसूक्त), 10. पूषा-सूक्त, 11. इन्द्र-सूक्त, 12. आप:-सूक्त, 13. अश्विनी-सूक्त, 14. वरुण-सूक्त।

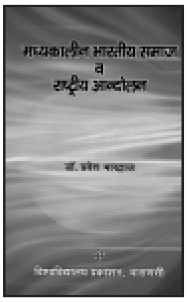

मध्यकालीन भारतीय समाज व राष्ट्रीय आन्दोलन

डॉ० प्रवेश भारद्वाज
द्वितीय संस्करण : 2012 ई०
पृष्ठ : 265

अजि. : रु० 200.00 ISBN:978-81-7124-951-0
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

बारहवीं शताब्दी से लेकर बीसवीं शताब्दी के मध्य तक का इतिहास अनुस्यूत है। उक्त ग्रन्थ में पूर्व मध्यकालीन समाज, तुर्की राजसंस्था एवं उसके अंग, दास-प्रथा-हिन्दू एवं मुस्लिम, मध्यकालीन शिक्षा, मुगलकालीन वास्तु-कला और उस पर हिन्दू-प्रभाव, सूफीमत : सम्प्रदाय व लोकप्रियता, राजपूत युग में हिन्दू धर्म, राजपूत बनाम खलीफा, सल्तनत व मुगलकाल में अमीर, वैष्णव धर्म, हिन्दू-मुस्लिम संस्कृतियों का समन्वय, भक्ति आन्दोलन, मुगलों व मरहठों का का सैनिक संगठन, उन्नीसवीं शताब्दी में पुनर्जागरण, ब्रह्म-समाज और राजा राममोहन राय, थियोसोफिकल सोसाइटी, भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन, 1909 ई० का मॉर्ले-मिण्टो सुधार, 1919 ई० का मौण्टेग्यू सुधार एवं भारतीयों की दशा, 1935 ई० का भारतीय शासन अधिनियम, भारत में मुस्लिम साम्प्रदायिकता, स्वतन्त्रता प्राप्ति के सहायक तत्त्व व 1947 ई० का अधिनियम आदि का विषद् वर्णन है।

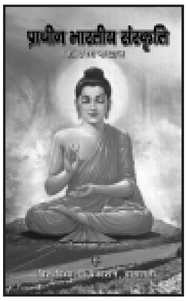

प्राचीन भारतीय संस्कृति
(छठीं शताब्दी ई०पू० से पूर्व-मध्यकाल तक)

डॉ० प्रवेश भारद्वाज
द्वितीय संस्करण : 2012 ई०
पृष्ठ : 132

अजि. : रु० 100.00 ISBN:978-81-7124-952-7
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

मनुष्य के लिए जो व्यक्तित्व है वहीं समाज के लिए संस्कृति है। उक्त ग्रन्थ में प्राचीन भारतीय संस्कृति की मुख्य विशेषता अनामता का सविस्तार उल्लेख है। यथा : छठीं शती ई०पू० का धार्मिक-सामाजिक आन्दोलन, जैनधर्म, बौद्ध धर्म, भारत का सांस्कृतिक प्रसार, प्राचीन हिन्दू समाज और वर्णाश्रम-व्यवस्था, प्राचीन हिन्दू समाज में संस्कार आदि प्राचीन भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्वों का विभिन्न अध्यायों में चित्रण किया गया है।

संगोष्ठी/लोकार्पण

पूरी दुनिया में हो रही 'बोलियों' की हत्या

विगत दिनों भोजपुरी अध्ययन केन्द्र (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय) व क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र वाराणसी के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित दो दिवसीय भोजपुरी लोक उत्सव-2012 के उद्‌घाटन अवसर पर कलाकारों व भोजपुरी के धुरंधरों को सम्मानित किया गया।

परिसर स्थित एनीबेसेंट सभागार में नाट्य शास्त्र विशेषज्ञ प्रो० कमलेश दत्त त्रिपाठी ने कहा कि आज दुनिया का सबसे बड़ा संकट संस्कृति के विनाश का संकट है। पूरी दुनिया में षडयंत्र के तहत भाषाओं और बोलियों की हत्या की जा रही है, जबकि भाषा चेतना और अन्त: प्रज्ञा का अभिन्न हिस्सा है। विशिष्ट वक्ता रंगकर्मी कुँवरजी अग्रवाल ने कहा कि पारम्परिक कला की सबसे बड़ी विशेषता उसका निजी तर्कगत सौन्दर्य है। भोजपुरी साहित्यकार प्रो० रामदेव शुक्ल ने कहा दुनिया में बोलियाँ मर रही हैं लेकिन भोजपुरी अपनी शक्ति से अपना प्रसार कर रही है। प्रो० अवधेश प्रधान ने कहा कि भोजपुरी संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता प्रतिरोध है। अध्यक्षता कला संकाय प्रमुख प्रो० महेन्द्र नाथ राय ने की। समन्वयन प्रो० सदानन्द शाही व धन्यवाद ज्ञापन क्षेत्रीय केन्द्र (वाराणसी) के निदेशक प्रो० रत्नेश वर्मा ने किया। संगोष्ठी के पश्चात् अस्सी घाट के मुक्ताकाशी मंच पर सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए।

हिन्दी बोलें और करें गर्व का अनुभव

विगत दिनों काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के भोजपुरी अध्ययन केन्द्र में 'विदेशियों को हिन्दी सीखने में कठिनाइयाँ' विषय पर ओस्लो विश्वविद्यालय नार्वे से सेवानिवृत्त प्रोफेसर फिन थीसन ने हिन्दी में व्याख्यान दिया और हिन्दी के अधिक से अधिक प्रयोग की वकालत की और कहा कि हिन्दी बोलने में हीनता का बोध नहीं होना चाहिए। आज स्थिति यह दिख रही है कि हिन्दी भाषी लोग ही अंग्रेजी में बात करने में गर्व का अनुभव कर रहे हैं। यह उचित नहीं है। उन्होंने कहा कि अपनी भाषा से प्रेम करें। प्रो० थीसन ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग से 1962-63 में डिप्लोमा किया था। अपनी यादों को ताजा करने वह यहाँ आए थे। संयोजन डॉ० श्रद्धा सिंह व धन्यवाद ज्ञापन प्रो० सदानन्द शाही ने किया।

कजरी समेत अन्य लोक कलाओं का तैयार होगा दस्तावेज

भारत की लोककला एवं शास्त्रीय कला की परम्पराएँ एक दूसरे को निरन्तर बल देती रही हैं। उनमें विभेद या संघर्ष की प्रवृत्ति को महत्त्व देना ठीक नहीं है। बल्कि इनका संरक्षण, संवर्धन और दस्तावेजीकरण जरूरी है। बनारस की कजरी समेत अन्य लोककलाओं का दस्तावेज तैयार किया जा रहा है, जिसे देश के विभिन्न पुस्तकालयों में रखा जाएगा। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कला संकाय में विगत दिनों तीन दिवसीय लोककला महोत्सव का शुभारम्भ करते हुए इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली की सदस्य सचिव दिपाली खन्ना ने ये बातें कहीं।

प्रेमचंद की पुण्यतिथि

कथा सम्राट प्रेमचंद की पुण्यतिथि पर विगत 8 अक्टूबर को उनके गाँव लमही में साहित्यसेवी जुटे। कलम के सिपाही के चरणों में श्रद्धा के फूल चढ़ाए। उनके व्यक्तित्व के अनछुए पहलुओं पर प्रकाश डाला व कृतित्व को सलाम किया।

यहाँ प्रेमचंद मेमोरियल ट्रस्ट की ओर से गोष्ठी का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि प्रो० शाहिना रिजवी ने लेखन में दलितों के प्रति पूर्वाग्रह की बात को थोथा करार दिया। अध्यक्षता जवाहरलाल कौल ने की। इस क्रम में नागरी नाटक मण्डली में 'सेतु' की ओर से नाट्य-प्रदर्शन भी किया गया।

रामानुजन का स्मरण

मेधा के प्रस्फुटन में भौतिक संसाधनों का अभाव कभी आड़े नहीं आता है। यही प्रेरणा हमें रामानुजन के जीवन से लेनी चाहिए। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय स्थित डीएसटी - अंतरविषयक गणितीय विज्ञान केन्द्र में आयोजित 'श्रीनिवास रामानुजन-एक मेधावी' शीर्षक व्याख्यान में उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति यतीन्द्र सिंह ने उक्त बातें कहीं। उन्होंने अपने व्याख्यान में यह बताने की चेष्टा की कि एक मेधावी का जीवन कैसा संघर्षमय रहा है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि यदि आप में मेधा है तो आपको वैसे सहयोगी मिल जाएँगे जैसे रामानुजन को अध्यापकों व ब्रिटिश अधिकारियों के रूप में मिले। केन्द्र के समन्वयक प्रो० उमेश सिंह ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि वर्ष 2012 भारत में गणितज्ञ रामानुजन की 125वीं वर्षगाँठ के रूप में मनाया जा रहा है।

हिमालय क्षेत्र में 90 से ज्यादा भाषा-भाषी

विगत दिनों काशी हिन्दू विश्वविद्यालय कला संकाय स्थित एस० राधाकृष्णन् सभागार में हिमायलयी भाषाएँ, साहित्य व संस्कृति विषयक दो दिवसीय संगोष्ठी के उद्‌घाटन अवसर पर मुख्य वक्ता नेपाल के प्रो० चुड़ामणि बन्धु ने कहा कि हिमालय क्षेत्र में 90 से ज्यादा भाषा भाषी हैं। इनकी अपनी संस्कृति व परम्पराएँ हैं। नेपाली, नेवारी, तिब्बती, मैथिली, भोजपुरी जैसी भाषाओं में समृद्ध साहित्य के विकास की सम्भावनाएँ हैं।

नेपाली भाषा की लेखन परम्परा तेरहवीं सदी से चली आ रही है। सारे हिमालय क्षेत्रों में यह सम्पर्क भाषा है।

मुख्य अतिथि नेपाल एकेडमी, काठमाण्डू के चांसलर बैरागी कैनला ने हिमालयी भाषाओं के विकास पर जोर दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कला संकाय प्रमुख प्रो० महेन्द्र नाथ राय ने की। धन्यवाद ज्ञापन भारतीय भाषा विभागाध्यक्ष डॉ० दिवाकर प्रधान ने किया।

'लोक जागरण' का श्रेय राम विलास शर्मा को

भक्ति आन्दोलन को लोक जागरण और 19वीं शताब्दी के आन्दोलन को नव जागरण के रूप में स्थापित करने का श्रेय राम विलास शर्मा को है। उन्होंने ही हिन्दी में इस अवधारणा को न सिर्फ मूर्त रूप दिया बल्कि उसे विकसित भी किया।

विगत दिनों काशी हिन्दू विश्वविद्यालय स्थित हिन्दी विभाग के तत्त्वावधान में आयोजित 'हिन्दी नव जागरण और राम विलास शर्मा' विषयक संगोष्ठी का उद्‌घाटन करते हुए प्रख्यात आलोचक प्रो० नामवर सिंह ने उक्त बातें कहीं। उन्होंने कहा कि हिन्दी नव जागरण व भारतीय नव जागरण को एक विशिष्ट अंश के रूप में देखने की आवश्यकता है। इसकी विशिष्टता को आज रेखांकित करने का समय है। प्रो० सिंह ने लोक जागरण को लोक भाषाओं के जागरण के रूप में देखने की जरूरत बताई, क्योंकि इसके पहले साहित्य में लोक भाषाएँ केन्द्र में नहीं थीं। साथ ही भारतीय नव जागरण की समस्याओं पर भी ध्यान देने पर बल दिया।

अध्यक्षता कला संकाय प्रमुख प्रो० महेन्द्र नाथ राय ने की। इस अवसर पर प्रो० चौथी राम यादव की पुस्तक 'हजारी प्रसाद द्विवेदी : समग्र पुनरावलोकन' और सत्यपाल शर्मा की 'राम विलास शर्मा का कवि कर्म' का विमोचन हुआ।

हृदय को छू जाते हैं मालवीय जी के शब्द

इलाहाबाद संग्रहालय में महामना की 150वीं जन्मशती के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम का उद्‌घाटन करते हुए उत्तर प्रदेश के राज्यपाल महामहिम बी०एल० जोशी ने कहा कि ''मालवीय जी ने कहा था कि देश प्रेम से बड़ा कोई धर्म नहीं है। उनके यह शब्द हृदय को छू जाते हैं। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए विरोधियों को भी तैयार कर लेने की क्षमता रखने वाले मालवीय जी के कार्यों को हमेशा याद रखा जाएगा।'' इस अवसर पर उन्होंने युवाओं का आह्वान किया कि वह संग्रहालय में सुरक्षित रखी हुई धरोहरों को जानने और समझने पहुँचें।

संग्रहालय के पण्डित बृजमोहन व्यास सभागार में पुरातत्त्वविदों की दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का भी आरम्भ हुआ। संग्रहालय के

निदेशक राजेश पुरोहित ने पुरातत्त्वविदों की राष्ट्रीय संगोष्ठी के स्वरूप के बारे में जानकारी दी।

साखयुक्त लेखक बनने पर जोर

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के केन्द्रीय ग्रन्थालय के तत्त्वावधान में स्वतन्त्रता भवन में 'लेखक कार्यशाला' का आयोजन किया गया। इसमें वक्ताओं ने साखयुक्त लेखक बनने तथा उत्कृष्ट जर्नल में शोध प्रकाशित कराने पर जोर दिया। अतिथि वक्ता यू०एस०ए० के चिकित्सा विज्ञानी प्रो० गेरी सोनवोल्फ ने कहा कि अपने शोध आलेख को उच्च इम्पेक्ट फैक्टर जर्नल में प्रकाशित कराएँ। यह जर्नल अधिक विश्वसनीय व अधिकांश पाठकों द्वारा पढ़े जाते हैं। प्रो० कुर्ट एच० अल्बरटीन ने कहा कि तार्किक एवं स्पष्ट लिखें एवं इसे प्रकाशन के माध्यम से सम्प्रेषित करें। यही प्रकाशन साख प्रदान करायेगा व कॅरियर शिखरता को प्राप्त करेगा।

मुख्य अतिथि प्रो० एस०सी० लखोटिया ने कहा कि शोध की सार्थकता उसके सम्प्रेषण से है। अध्यक्षता करते हुए प्रो० ओ०एन० श्रीवास्तव ने ज्ञान साझा करना सामाजिक उत्तरदायित्व बताया। विश्वविद्यालय के पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ० ए०के० श्रीवास्तव ने अतिथियों का स्वागत किया। कार्यशाला में लगभग दो सौ प्रतिभागियों ने भाग लिया।

'मैं मुहब्बत' कृति का विमोचन

ख्यातिलब्ध साहित्यकार डॉ० काशीनाथ सिंह ने कहा है कि देश की आजादी के बाद राजनेताओं ने हिन्दी व उर्दू के बीच दीवार खड़ा करने की कोशिश की। लेखन के माध्यम से लेखकों को साम्प्रदायिकता के खिलाफ आगे आना चाहिए। वे विगत दिनों महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ के गाँधी अध्ययन पीठ के सभागार में सैयद जैगम इमाम के उपन्यास 'मैं मुहब्बत' का विमोचन करते हुए विचार व्यक्त कर रहे थे।

13वाँ राजभाषा हिन्दी विशिष्ट व्याख्यान

भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून में आयोजित किए जाने वाले हिन्दी कार्यक्रमों की चर्चा करते हुए प्रो० दुर्गा प्रसाद गुप्त, जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, दिल्ली ने संस्थान में हिन्दी के प्रति विद्यमान प्रेम की सराहना की। प्रो० गुप्त ने कहा कि 60 करोड़ से अधिक लोगों की इस भाषा के अनेक रूप हैं। यह भाषा भारत की भाषिक और सांस्कृतिक विविधता का प्रतीक है। हिन्दी किसी एक विशेष राज्य अथवा जाति की भाषा नहीं है। अपने उदार चरित्र के कारण हिन्दी विश्व के श्रेष्ठतम साहित्य एवं भारतीय भाषाओं के साहित्य की अभिव्यक्ति बनी है। प्रो० गुप्त ने आश्चर्य प्रकट किया कि भारत को छोड़कर विश्व में अन्य कहीं भी प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा से इतर भाषाओं में नहीं दी जाती। हम बहुत-सारी गुलामियों में जी रहे हैं, जिनका प्रारम्भ भाषा से होता है। हमें अपनी भाषा में ज्ञान-विज्ञान लिखना व सीखना चाहिए तथा सृजनात्मकता को अपनाना चाहिए, नहीं तो एक राष्ट्र के रूप में हमारा अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। अपने व्याख्यान के अन्त में हिन्दी के रोजगार की भाषा बनने सम्बन्धी एक प्रश्न के उत्तर में प्रो० गुप्त ने हिन्दी को षड्यंत्र से मुक्त करते हुए उसका अधिकार दिए जाने की आवश्यकता पर बल दिया। संयोजक डॉ० दिनेश चमोला ने अतिथि का सम्मान किया।

25वाँ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन

राष्ट्रीय हिन्दी अकादमी, रुपाम्बरा द्वारा पुरी (ओड़िशा) में आयोजित 25वें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का उद्घाटन पूर्व केन्द्रीय मन्त्री श्री कान्हू चरण लेंका द्वारा किया गया। संसदीय राजभाषा समिति के संयोजक श्री प्रसन्न कुमार पाठसाणी ने सम्मेलन की अध्क्षता की। इस अवसर पर ओड़िया-साहित्य के जनक श्री फकीर मोहन सेनापति की स्मृति में सृजित श्री फकीर मोहन सेनापति साहित्य-सम्मान द्वारा ओड़िया के सुप्रसिद्ध कवि श्री ब्रजनाथ रथ तथा विशिष्ट हिन्दी सेवा सम्मान द्वारा श्रीमती डॉ० समर प्रिया, डॉ० वाई० लक्ष्मी प्रसाद, डॉ० शंकर लाल पुरोहित आदि विद्वानों को सम्मानित किया गया। इसी के साथ 15 सरकारी उपक्रमों को सहस्राब्दि राष्ट्रीय राजभाषा शील्ड तथा राजभाषा पत्रिका शील्ड सम्मान द्वारा सम्मानित किया गया। इस अवसर पर स्वदेश भारती की तीन पुस्तकों—वृहत कार्यालयीन तकनीकी भाषा कोश, सागर-प्रिया महाकाव्य का अंग्रेजी अनुवाद 'दि ओसन-विलवेड' तथा डॉ० विजय मोहन्ती द्वारा सागर-प्रिया का ओड़िया अनुवाद तथा अन्य साहित्य का विमोचन हुआ।

तीन दिवसीय सम्मेलन में कुल नौ सत्रों में हिन्दी एवं भारतीय भाषाओं के विकास तथा उन्नयन पर गम्भीर विचार-विमर्श हुआ।

राम सरूप अणखी स्मृति कहानी-गोष्ठी

राम सरूप अणखी स्मृति कहानी-गोष्ठी का आयोजन इस वर्ष डलहौजी के होटल मेहर में हुआ। संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में संयोजक अमरदीप गिल ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया और तीनदिवसीय संगोष्ठी की रूपरेखा रखी। संगोष्ठी के आयोजक और कहानी पंजाब के सम्पादक डॉ० क्रान्ति पाल ने इन संगोष्ठियों के आयोजन की सुदीर्घ परम्परा को स्पष्ट किया।

इस वर्ष अतानु भट्टाचार्य (असमिया कहानीकार), पंकज कुमार (डोगरी कहानीकार), गुरसेवक सिंह प्रीत (पंजाबी कहानीकार), सिमरन धालीवाल (युवा पंजाबी कहानीकार), अग्निशेखर (प्रसिद्ध हिन्दी लेखक), संजीव कुमार (हिन्दी आलोचक और कथाकार) ने अपनी कहानियों का स्वयं पाठ किया। संगोष्ठी का उद्घाटन रामस्वरूप अणखी की प्रतिनिधि कहानी 'सोया हुआ साँप' कहानी से हुआ जिसका पाठ आलोचक और अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के सह आचार्य डॉ० अजय बिसारिया ने किया। संगोष्ठी में विगत दिनों दिवंगत कथाकार अरुण प्रकाश और पंजाब में जीवन भर सक्रिय रहे कामरेड सुरजीत गिल को श्रद्धांजलि दी गई।

'मेरी विदेश यात्रा : आस्ट्रेलिया' लोकार्पित

"डॉ० जवाहर धीर ने लेखक का दायित्व निभाते हुए जिस जीवन्त शैली में अपनी नई पुस्तक 'मेरी विदेश यात्रा : आस्ट्रेलिया' लिखी है, उसके लिए वह बधाई के पात्र हैं क्योंकि आस्ट्रेलिया में पढ़ने के लिए गए हमारे बच्चों को पेश आती मुश्किलों पर लेखक ने पैनी दृष्टि रखते हुए संदेश दिया है कि विदेश जाने की राह अब आसान नहीं है।" यह बात साहित्य सभा, फगवाड़ा द्वारा आयोजित कार्यक्रम में एस०डी०एम० श्री पी०सी० सिंह ने डॉ० जवाहर धीर की पुस्तक 'मेरी विदेश यात्रा : आस्ट्रेलिया' के विमोचन के अवसर पर कही। पुस्तक-चर्चा में कवि मोहन सपरा, डॉ० रमेश साबती, डॉ० जगीर सिंह नूर एवं लेखक डॉ० धीर ने सहभागिता की।

धुरंधर बनारसी थे मुरारीलाल केडिया

वाराणसी। स्व० मुरारीलाल केडिया धुरंधर बनारसी थे। वह न केवल एक सफल व्यवसायी बल्कि साहित्यकार व कला प्रेमी भी थे। उन्हें बहुआयामी व्यक्तित्व का स्वामी कहा जाए तो अतिशयोक्ति न होगी। काशी कौस्तुभ स्व० मुरारीलाल केडिया की जन्म शताब्दी पर विगत दिनों आयोजित समारोह में वक्ताओं ने इस आशय के उद्‌गार व्यक्त किए। मुख्य अतिथि साहित्यकार डॉ० बदरीनाथ कपूर थे।

अध्यक्षता पद्मश्री डॉ० रेवा प्रसाद द्विवेदी और संचालन पं० धर्मशील चतुर्वेदी ने किया। वक्ताओं ने अपने संस्मरणों में केडिया जी के बनारसीपन, उनकी कला, साहित्य एवं संगीत प्रेम, वाक्‌पटुता व हाजिरजवाबी का उल्लेख किया। इस अवसर पर केडिया जी के जीवन वृत्त पर प्रकाशित स्मारिका वितरित की गई।

सामग्रियों ने सुनाई गाथा

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय स्थित भारत कला भवन में रखी सामग्रियों ने अतीत की गाथा सुनाई। काशी के प्रतिष्ठित व्यवसायी एवं संग्रहकर्ता श्रीमुरारी लाल केडिया जन्मशती समारोह के अन्तर्गत यहाँ विगत 31 अक्टूबर को 'केडिया संग्रह प्रदर्शनी' लगाई गई। इसमें विद्वानों, साहित्यकारों एवं विशिष्ट व्यक्तियों के हस्ताक्षर, पाण्डुलिपियाँ और उनके द्वारा प्रयुक्त सामग्रियाँ प्रदर्शित की गईं। मुंशी प्रेमचंद का संदूक, चश्मा, कपड़े एवं पाण्डुलिपियाँ, राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की छड़ी और आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र की

पाण्डुलिपि प्रमुख रूप से प्रदर्शित थीं। श्री मुरारी लाल केडिया जी की साहित्य सामग्री एवं मृण्मूर्तियों की झलक प्रदर्शनी में दिखी।

कुलपति डॉ० लालजी सिंह ने प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। इस अवसर पर 'केडिया साहित्य संग्रह प्रदर्शनी' नामक पत्रिका का विमोचन किया गया। संचालन डॉ० राधाकृष्णन गणेशन ने किया।

'भोजपुरी संघर्ष यात्रा' का विमोचन

वाराणसी। विश्व भोजपुरी संघ के तत्त्वावधान में विगत दिनों 'भोजपुरी भाषा संघर्ष' यात्रा पुस्तक का विमोचन किया गया। यह पुस्तक मॉरीशस की हुशिला देवी रिसौल ने लिखी है। श्री अपूर्व नारायण तिवारी ने विमोचन किया।

बहुभाषी पुस्तक लोकार्पित

वाराणसी। मॉरीशस की लोकगायिका हुशिला देवी रिसौल की बहुभाषी पुस्तक 'होमलैण्ड मॉरीशस : मदरलैण्ड इंडिया' का विगत दिनों संकटमोचन मन्दिर के महंत प्रो० वीरभद्र मिश्र ने लोकार्पण किया।

पुस्तक के सम्पादक व वर्ल्ड भोजपुरी आर्गेनाइजेशन के महासचिव श्री अपूर्व नारायण तिवारी ने बताया कि दोनों देशों के बीच आत्मीयता व प्रगाढ़ता की यह महत्त्वपूर्ण किताब है, जिसमें हुशिला रिसौल की ओर से 50 दिन की भारत भोजपुरी यात्रा का वर्णन है। साथ ही हिन्दी, भोजपुरी, क्रियोल, अंग्रेजी व फ्रेंच में रची कविताओं का संग्रह है।

प्रभाकर श्रोत्रिय का 'इला' मराठी में

प्रख्यात हिन्दी आलोचक और नाट्यकार प्रभाकर श्रोत्रिय के नाटक 'इला' के मराठी अनुवाद का मंचन विगत दिनों नई दिल्ली के महाराष्ट्र रंगायन में हुआ। मंचन गोआ की प्रसिद्ध नाट्य संस्था कला ओंकार, पणजी ने किया। इस अवसर पर 'इला' को राष्ट्रीय नाट्य स्पर्धा में पहला पुरस्कार दिया गया।

बालशौरि रेड्डी कथा रचनावली विमोचित

दक्षिण अफ्रीका में आयोजित 'नवें विश्व हिन्दी सम्मेलन' (22-24 सित., 2012) में डॉ० कमल किशोर गोयनका द्वारा सम्पादित 'बालशौरि रेड्डी कथा रचनावली' (4 खण्ड) का लोकार्पण विदेश राज्यमन्त्री श्रीमती पुनीत कौर ने किया। इसमें उनके 14 उपन्यास व 24 कहानियाँ संकलित हैं। देश के हिंदीतर प्रांतों के किसी हिन्दी लेखक की प्रकाशित होने वाली यह पहली रचनावली है।

बेटियों की उपस्थिति में 'मंटो जिन्दा है'

विगत दिनों दिल्ली स्थित जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में विश्वविद्यालय के कुलपति की अध्यक्षता में उर्दू के विख्यात लेखक सआदत हसन मंटो की जन्म-शताब्दी के कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थीं मंटों की बेटियाँ—निगहत मंटो, नुजहत मंटो और नुसरत मंटो। प्रोफेसर चमनलाल ने मंटो की जीवनी और उनकी रचनाओं का परिचय देते हुए कहा कि यह एक ऐतिहासिक क्षण है जब हम मंटो की बेटियों के साथ एक संवाद में शामिल हैं।

इस अवसर पर हिन्दी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ० नरेन्द्र मोहन द्वारा लिखित जीवनी 'मंटो जिन्दा है' का मंटो की बेटियों द्वारा लोकार्पण भी किया गया।

'ओंकार वाणी' के हिन्दी व तमिल संस्करण का विमोचन

पुदुच्चेरी स्थित ओंकार आश्रम के महाधिपति स्वामी ओंकारानंद की पुस्तक 'ओंकार वाणी' के हिन्दी व तमिल संस्करणों का विमोचन विगत दिनों काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी में किया गया। मुख्य अतिथि भारत सरकार के पूर्व संस्कृति सचिव एम० वरद्राजन ने विमोचन करते हुए मुख्य अतिथि के पद से पुस्तक के अनेक उद्धरणों की व्याख्या की।

उपन्यास लेखक खुदा की तरह रचना में होता है मौजूद

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग की ओर से विगत दिनों उर्दू साहित्य के आलोचक व कथाकार प्रो० शम्सुर्रहमान फारूकी का व्याख्यान आयोजित हुआ। कला संकाय में 'कथा साहित्य का स्वभाव' विषयक व्याख्यान में प्रो० फारूकी ने कहा कि नॉवेल लिखने वाला नॉवेल में हर जगह खुदा की तरह मौजूद होता है लेकिन वह दिखता नहीं।

उन्होंने कहा, अफसाने में घटना या कथा का होना आवश्यक है। किसी घटना की सभी सम्भव सम्भावनाओं पर विचार करने के बाद ही सम्भावना को कल्पना के रंग में ढालकर, उसे वास्तविक स्वरूप में बयान किया जाता है। प्रो० कुमार पंकज ने प्रो० फारूकी के उपन्यास 'कई चांद थे सरे आसमां' को हिन्दी के 'झूठ सच' और 'रागदरबारी' के समान ही शास्त्रीय उपन्यास बताया।

उच्च शिक्षा में गुणवत्ता प्राथमिकता

विगत दिनों योजना आयोग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय तथा भारतीय उद्योग वाणिज्य मंडल (फिक्की) द्वारा आयोजित 8वें उच्च शिक्षा ग्लोबल सम्मेलन का उद्घाटन मानव संसाधन विकास राज्यमंत्री शशि थरूर ने किया। इस दो दिवसीय सम्मेलन का आयोजन भारत में उच्च शिक्षा में गुणवत्ता बढ़ाने के उद्देश्य से किया गया। स्वागत भाषण फिक्की के उपाध्यक्ष सिद्धार्थ बिड़ला ने तथा मुख्य वक्तव्य एच०सी०एल० के अध्यक्ष शशि नाडर ने दिया। इस अवसर पर उन्होंने योजना आयोग और फिक्की की उच्च शिक्षा पर रिपोर्ट तथा भारत में निजी शिक्षण संस्थानों की रिपोर्ट तथा 'भारत में उच्च शिक्षा के पचास वर्ष' नामक पुस्तक भी जारी की।

श्री शशि थरूर ने कहा कि आई०आई०टी० और आई०आई०एम० में 30 से 35 प्रतिशत शिक्षकों की कमी है जबकि राज्यों के विश्वविद्यालयों में 50 प्रतिशत शिक्षकों की कमी है। उन्होंने कहा कि शोध कार्य में भारत की हिस्सेदारी विश्व में मात्र 3.5 प्रतिशत है जबकि दुनिया की 17 प्रतिशत मेधा भारत में है। उन्होंने यह भी कहा कि आनंदकृष्णन समिति ने शिक्षा से जुड़े हर मंत्रालय का दो प्रतिशत हिस्सा शोध कार्यों पर खर्च करने की सिफारिश की है और नारायणमूर्ति समिति ने उद्योग जगत तथा सरकार के बीच सम्बन्धों को मजबूत बनाने के लिए एक राष्ट्रीय परिषद् गठित करने की सिफारिश की है। सरकार इन दोनों सिफारिशों को लागू करने पर विचार कर रही है।

बाबूराव विष्णुराव पराड़कर की जयंती

वाराणसी में काशी पत्रकारिता संघ की ओर से श्री बाबूराव विष्णुराव पराड़कर की 129वीं जयन्ती पराड़कर भवन में मनाई गई। इस अवसर पर वक्ताओं ने कहा कि भारतीय संस्कृति की रक्षा पत्रकारिता एवं शिक्षा से ही सम्भव है। पराड़करजी सामाजिक सरोकारों के प्रति हमेशा सजग रहे। उनके मिशन को पूरा करने के लिए पत्रकारिता में बाजारवादी चुनौती का विकल्प तैयार करना होगा। मुख्य अतिथि गोरखपुर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपतिप्रो० वेणी माधव शुक्ल थे। अध्यक्षता जगत नारायण शर्मा ने की। संचालन डॉ० अत्रि भारद्वाज एवं धन्यवाद राजेन्द्र रंगप्पा ने ज्ञापित किया।

झारखण्ड में साहित्यिक कार्यक्रम

नेशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया की ओर से के० के०एम० कॉलेज, पाकुड़ में कॉलेज और 'मानवी' संस्था के सहयोग से एक दिवसीय साहित्यिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में ट्रस्ट की ओर से प्रकाशित छह नवीनतम हिन्दी पुस्तकों का लोकार्पण किया गया—'त्रिपुरा की जनजातीय लोककथाएँ', 'बिरसा की कहानी', 'उड़ान', 'नीम की बेटी', 'पढ़ना है' और 'लोरियाँ'।

इस अवसर पर 'जनजातीय समाज में पठन-अभिरुचि का विकास कैसे हो' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन भी किया गया। वक्ता थे—डॉ० अशोक प्रियदर्शी, श्री नलिनी कांत और डॉ० कृपाशंकर अवस्थी।

राजधानी में संस्मरणों की बात

विगत दिनों दिल्ली में वरिष्ठ आलोचक विश्वनाथ त्रिपाठी ने कहा कि संस्मरण की कसौटी यह है कि उसमें रचनाकार दिखाई न दे। यद्यपि संस्मरणकार अलक्षित नहीं रह सकता, जबकि रचनाकार अलक्षित रह जाता है क्योंकि संस्मरण में रचनाकार एक पात्र है। यह बात

उन्होंने संस्मरणों की विधा पर प्रसार भारती द्वारा आयोजित उस समारोह में कही, जिसमें वरिष्ठ कथाकार ज्ञानरंजन और जनसत्ता के सम्पादक ओम थानवी ने अपने संस्मरण सुनाए। विविध प्रकार के संस्मरण सुनने के बाद उन्होंने कहा कि साहित्य की पहचान यह है कि उसकी अंतर्वस्तु कितनी मानवीय है और उसमें कितनी करुणा है।

नैरोबी में 'सारे जहां से अच्छा'

नैरोबी (कीनिया) में इस वर्ष हिन्दी प्रेमी भारतीय वर्ग ने हिन्दी दिवस का आयोजन किया। विविधरंगी इस भावभीनी प्रस्तुति में भारतवंशियों का उत्साह एवं बड़ी संख्या में ध्यान आकर्षण करने का केन्द्र रहे कवितापाठ, हिन्दी के कई आयामों को स्पर्श करती चर्चा तथा सुझाव आदि के माध्यम से हुए संवाद।

राष्ट्रीय प्रकाशक संघ का वार्षिक अधिवेशन जयपुर में सम्पन्न

राष्ट्रीय प्रकाशक संघ, दिल्ली का द्वितीय वार्षिक अधिवेशन जयपुर में सम्पन्न हुआ। इस बार अधिवेशन में चर्चा का विषय था—'पुस्तक प्रकाशन एवं चुनौतियाँ'। सेमिनार की उपलब्धि यह रही कि इस चर्चा में प्रकाशकों एवं लेखकों ने प्रकाशन, लेखन एवं पठन-पाठन के महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं पर चर्चा की। विधिवत् उद्घाटन राजस्थान साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष वेद व्यास एवं संघ के अध्यक्ष योगेन्द्र पाल त्यागी ने किया।

याद किया गया 'आवारा मसीहा' को

वर्ष 2012 के हिन्दी पखवाड़े के परिप्रेक्ष्य में गाँधी हिन्दुस्तानी साहित्य सभा और विष्णु प्रभाकर प्रतिष्ठान की ओर से दिल्ली में आयोजित साहित्यकार विष्णु प्रभाकर की जन्मशती समारोह में खास तौर से युवाओं ने उनके लेखन पर आधारित विभिन्न कार्यक्रमों को प्रस्तुत किया।

भवानी प्रसाद मिश्र स्मृति समारोह

होशंगाबाद। विगत दिनों नर्मदांचल की अन्तरराष्ट्रीय काव्य प्रतिभा भवानी प्रसाद मिश्र की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में नगरी की गतिशील संस्था शिव संकल्प साहित्य परिषद के तत्वावधान में साहित्यकार डॉ० गिरिजाशंकर शर्मा के मुख्य आतिथ्य में एक काव्य सन्ध्या का आयोजन कर मिश्र जी को याद किया गया।

रिहंद में कवि सम्मेलन

रिहंदनगर (सोनभद्र)। विगत दिनों एन टी पी सी रिहंद में राजभाषा हिन्दी के संवर्धन हेतु अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें देश के ख्यातिलब्ध कवियों ने सहभागिता की। साथ ही एन टी पी सी रिहंद को राजभाषा में बेहतर कार्य के लिए नैगम स्तर की द्वितीय राजभाषा शील्ड (स्वर्ण शक्ति पुरस्कार-उपविजेता) प्रदान की गयी।

स्मृति शेष

बाल साहित्यकार डॉ० श्रीप्रसाद नहीं रहे

हिन्दी के लब्ध प्रतिष्ठ बाल साहित्यकार एवं सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में हिन्दी के पूर्व प्रोफेसर 80 वर्षीय डॉ० श्रीप्रसाद का 12 अक्टूबर को दिल्ली के एक अस्पताल में निधन हो गया। उनका जन्म 5 जनवरी 1932 को आगरा के पराना गाँव में हुआ था। उनकी सम्पूर्ण शिक्षा बनारस में हुई। आप जीवनपर्यन्त साहित्य साधक के तौर पर बाल साहित्य की रचना में संलग्न रहे।

बच्चों के लिए आपने 500 से अधिक कहानियों व 5000 से अधिक कविताओं व नाटकों का सृजन किया। बाल पाठ्य पुस्तकों में रचनाओं का संकलन और मराठी, सिंधी व कन्नड़ में अनुवाद, 'हल्लम हल्ला' नाम से बाल गीतों के कैसेट का निर्माण किया। कई बार बाल साहित्य सम्मेलनों में भारत का प्रतिनिधित्व किया। आपको वर्ष 1995 में उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा देश के सर्वोच्च बाल साहित्य सम्मान 'बाल साहित्य भारती' से पुरस्कृत किया गया। वर्ष 1999 में 'साहित्य महोपाध्याय' की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया। आल इण्डिया राइटर्स एण्ड इलस्ट्रेटर्स एसोसिएशन द्वारा 2012 में 'लाइफ टाइम एचीवमेंट' एवार्ड व 'रेखा जैन बाल रंगसम्मान' भी प्राप्त हुआ। आपकी कृतियों में बाल काव्य संग्रह मेरा साथी घोड़ा (केन्द्र से अखिल भारतीय पुरस्कार), खिड़की से सूरज, आरी कोयल, अक्कड़ बक्कड़ का नगर आदि प्रमुख हैं। शिशु गीत संग्रह—चिड़िया घर की सैर, फूलों के गीत, तकतकधिन, झिलमिल सितारे, बाल कहानी संग्रह—रेल की सीटी, पिकनिक और अन्य कहानियाँ, आजा री सुखनींदरिया, नई राह प्रमुख हैं।

काशी के साहित्यिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में आत्मीयतापूर्वक उन्हें स्मरण करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की गयी।

सुनील गंगोपाध्याय का निधन

विगत 23 अक्टूबर को 1934 में जन्मे बांग्ला के शीर्षस्थ साहित्य शिल्पी, साहित्य अकादमी के अध्यक्ष सुनील गंगोपाध्याय का कोलकाता में दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया। वह 78 वर्ष के थे। उन्होंने 200 से अधिक किताबें लिखीं। नीरा शृंखला की उनकी कविताएँ अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। वे पाँच वर्षों तक साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष रहे तथा फरवरी 2008 में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। उनको 1985 में उपन्यास 'सेई सेमॉय' के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्रदान किया गया था। सुनील दा को इस वर्ष का आनंद बाजार पत्रिका लाइफ टाइम एचीवमेंट पुरस्कार कोलकाता में पिछले दिनों दिया गया था। बंगाल का प्रतिष्ठित आनंद पुरस्कार (दो बार), साहित्य अकादमी पुरस्कार और सरस्वती सम्मान सहित कई पुरस्कारों से सम्मानित सुनील दा को सबसे बड़ा पुरस्कार बांग्ला पाठकों ने दिया। बांग्ला पाठकों में जितनी जनप्रियता उनकी रही, वह उनके किसी समकालीन बांग्ला लेखक को नसीब न हुई। सुनील दा कोलकाता में ऐसे सेलेब्रेटी थे, जो सर्वदा सबको सुलभ थे।

रामशरण शर्मा 'मुंशी' का निधन

जनवादी लेखक संघ और जन संस्कृति मंच (दिल्ली) के कवि और अनुवादक रामशरण शर्मा 'मुंशी' जी का 90 वर्ष की आयु में पिछले दिनों दिल्ली में निधन हो गया। हिन्दी के प्रख्यात आलोचक डॉ० रामविलास शर्मा के भाई मुंशी उनसे 11 वर्ष छोटे थे। रामशरण शर्मा हिन्दी साहित्य के प्रगतिशील आन्दोलन के महत्त्वपूर्ण कर्मी थे।

हस्तलिखित के सम्पादक नहीं रहे

साप्ताहिक हस्तलिखित समाचारपत्र 'दीन दलित' के सम्पादक गौरी शंकर रजक का विगत 23 नवम्बर 2012 को निधन हो गया। वह लम्बे समय से बीमार चल रहे थे। रजक बिना किसी सहयोग के दो नवम्बर, 1986 से आठ पृष्ठों का हस्तलिखित अखबार निकाल रहे थे। अखबार वे खुद वितरित भी करते थे। भारतीय रेडक्रास सोसाइटी ने निधन पर दुख जताते हुए उनके अन्तिम संस्कार के लिए आर्थिक मदद दी।

प्रो० श्यामसुन्दर शुक्ल नहीं रहे

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग के पूर्व आचार्य व जाने माने राष्ट्रवादी विचारक प्रो० श्यामसुन्दर शुक्ल का विगत 9 नवम्बर को अचानक दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया। उनके निधन पर शहर के कई संस्थान शोक में बन्द रहे। प्रो० शुक्ल संत साहित्य के विलक्षण विद्वान थे।

श्रीमती अंगूरी देवी का निधन

विगत 29 अक्टूबर को गद्य-पद्य लेखन में समान अधिकार रखनेवाली उत्तरप्रदेश शिक्षा विभाग द्वारा राज्य पुरस्कार से सम्मानित 83 वर्षीय श्रीमती अंगूरी देवी माहेश्वरी का नोएडा में निधन हो गया। उन्होंने पत्र-पत्रिकाओं के लिए कई लेख, कहानियाँ, एकांकी आदि लिखे।

याद किए गए डॉ० विश्वनाथ प्रसाद

वाराणसी। हिन्दी के समीक्षक साहित्यकार डॉ० विश्वनाथ प्रसाद की पुण्यतिथि पर कीर्ति बोध संस्थान की ओर से उनके भोजूबीर स्थित आवास पर विगत दिनों श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया।

'भारतीय वाङ्मय' परिवार अपनी अश्रुपूरित भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

प्राप्त पुस्तकें और पत्रिकाएँ

मानव उत्थान के परिप्रेक्ष्य में गाँधीजी मेरे रहनुमा : नानुभाई नायक

यस, वी कॅन! बट व्हाय वी कॅन नॉट ? एण्ड हाउ वी कॅन! : नानुभाई नायक, प्रकाशक : साहित्य संगम, बावा सीदी, पंचोली बाडी के सामने, गोपीपूरा, सूरत-395001, संस्करण : प्रथम, मूल्य : 150/- रु०

× × गुजराती भाषा, साहित्य और पत्रकारिता के क्षेत्र में सुपरिचित गम्भीर विचारक एवं मौन साधक नानुभाई नायक की ये दोनों पुस्तकें उनके राजनीतिक आलेखों का संकलन हैं। मूल्य आधारित राजनय के पक्षधर श्री नायक की पहली पुस्तिका में महात्मा गाँधी और जयप्रकाश नारायण के विचारों, कार्यक्रमों को आधार बनाकर एवं दूसरी पुस्तक के गाँधीजी, मार्टिन लूथर किंग एवं युद्ध के कगार पर खड़े विश्व को सन्दर्भित कर आलेख संकलित हैं। इसके अतिरिक्त सन्दर्भानुकूल अच्छी कविताएँ भी पठनीय हैं।

मैत्रीभावना : मानसिक स्वास्थ्य एवं सुखी जीवन का चामत्कारिक योग : कमलाकर मिश्र, प्रकाशक : काशी योग एवं मूल्य शिक्षा संस्था, 35, दीनदयाल नगर कालोनी, वाराणसी-221010, संस्करण : प्रथम, मूल्य : 150/- रु०

× × शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रहने की दार्शनिक (वेदान्त, जैन, बौद्ध) प्रक्रियाओं एवं दुनिया के दूसरे धर्मों, सम्प्रदायों, विचारों के परिदृश्य में आज के जीवन की जटिलता से उपजे विकारों के शमन का मार्ग खोजने की दिशा में सार्थक हैं इस ग्रन्थ के आलेख।

कौण्डिन्य (प्रबन्ध-काव्य) **:** डॉ० सुशील कुमार पाण्डेय 'साहित्येन्दु', प्रकाशक : कौण्डिन्य साहित्य सेवा समिति, पटेल नगर, कादीपुर, सुलतानपुर (उ०प्र०), संस्करण : प्रथम, मूल्य : 450/- रु०

× × देशान्तरों में परिव्याप्त भारतीय संस्कृति के प्रसार-चिन्ह इतिहास और पुरातत्व के ही नहीं बल्कि साहित्य-चिन्ता की परिधि में भी हैं और इसका प्रमाण है प्रस्तुत वृत्त काव्य 'कौण्डिन्य'। एक उपलब्ध सूत्र के आधार पर वर्तमान देश कम्बोडिया के संस्थापक आदिपुरुष कौण्डिन्य के वृत्त पर आधारित सरल आलेख है यह काव्य।

पत्रकारिता के बदलते तेवर : डॉ० वसुंधरा मिश्र, प्रकाशक : इंस्टीट्यूट ऑफ मीडिया मैनेजमेंट, बीकानेर, संस्करण : प्रथम, मूल्य : 500/- रु०

× × पुस्तक में पत्रकारिता के 'मिशन' से 'व्यवसाय' बनने तक की बातें विभिन्न आलेखों के बीच कहते हुए सामाजिक-विश्लेषण भी किया गया है। आज़ादी के बाद भारत के आर्थिक विकास, इलेक्ट्रॉनिक-संचार क्रान्ति, मीडिया की भूमिका का प्रसार, संचालक-प्रायोजक कारपोरेट-घराने आदि की पड़ताल करते हुए पत्रकारिता में आये बदलाव को रेखांकित किया गया है।

टहनी पर चिड़िया : वसुंधरा मिश्र, प्रकाशक : डी०एल०एस० जयवर्धन महाबोधि बुक एजेन्सी, 4ए बंकिम चटर्जी स्ट्रीट, कोलकाता-700073, संस्करण : प्रथम, मूल्य : 200/- रु०

× × सुधी लेखिका ने हिन्दी की कथा-परम्परा में ही अपने रचना-संसार को आकार देते हुए प्रस्तुत किया है कथा-संकलन—टहनी पर चिड़िया। जीवन की जटिलताओं के बीच प्रकृति, मूल्यबोध और संवेदना की परतों में लिपटी ये कहानियाँ व्यापक-अर्थ देती हैं।

उत्तर-आधुनिक साहित्य विमर्श : हरेराम पाठक, प्रकाशक : अनंग प्रकाशन, बी-107/1, गली मन्दिर वाली, समीप रबर फैक्ट्री, उत्तरी घोण्डा, दिल्ली-110053, संस्करण : प्रथम, मूल्य : 350/- रु०

वेबसाइट

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 13 नवम्बर-दिसम्बर 2012 अंक : 11-12

संस्थापक एवं पूर्व प्रधान संपादक

स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी

संपादक : **परागकुमार मोदी**

वार्षिक शुल्क : रु० 60.00

अनुरागकुमार मोदी

द्वारा

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०

वाराणसी *द्वारा मुद्रित*

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2012-14 RNI No. UPHIN/2000/10104

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत

Licenced to post without prepayment at

G.P.O. Varanasi

Licence No. Stock/RNP/vsi E/001/2012-2014

सेवा में,

☎ : Offi.: (0542) 2413741, 2413082 (Resi.) 2436498, 2311423 ● Fax: (0542) 2413082

E-mail : **vvp@vsnl.com** ▪ **sales@vvpbooks.com** ● Website : **www.vvpbooks.com**

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो०बॉक्स 1149

चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIANS)

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149

Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)